जुलाई 2025

समहुतांक

दीया बाती

भोजपुरी, तिमाही, ई-पत्रिका

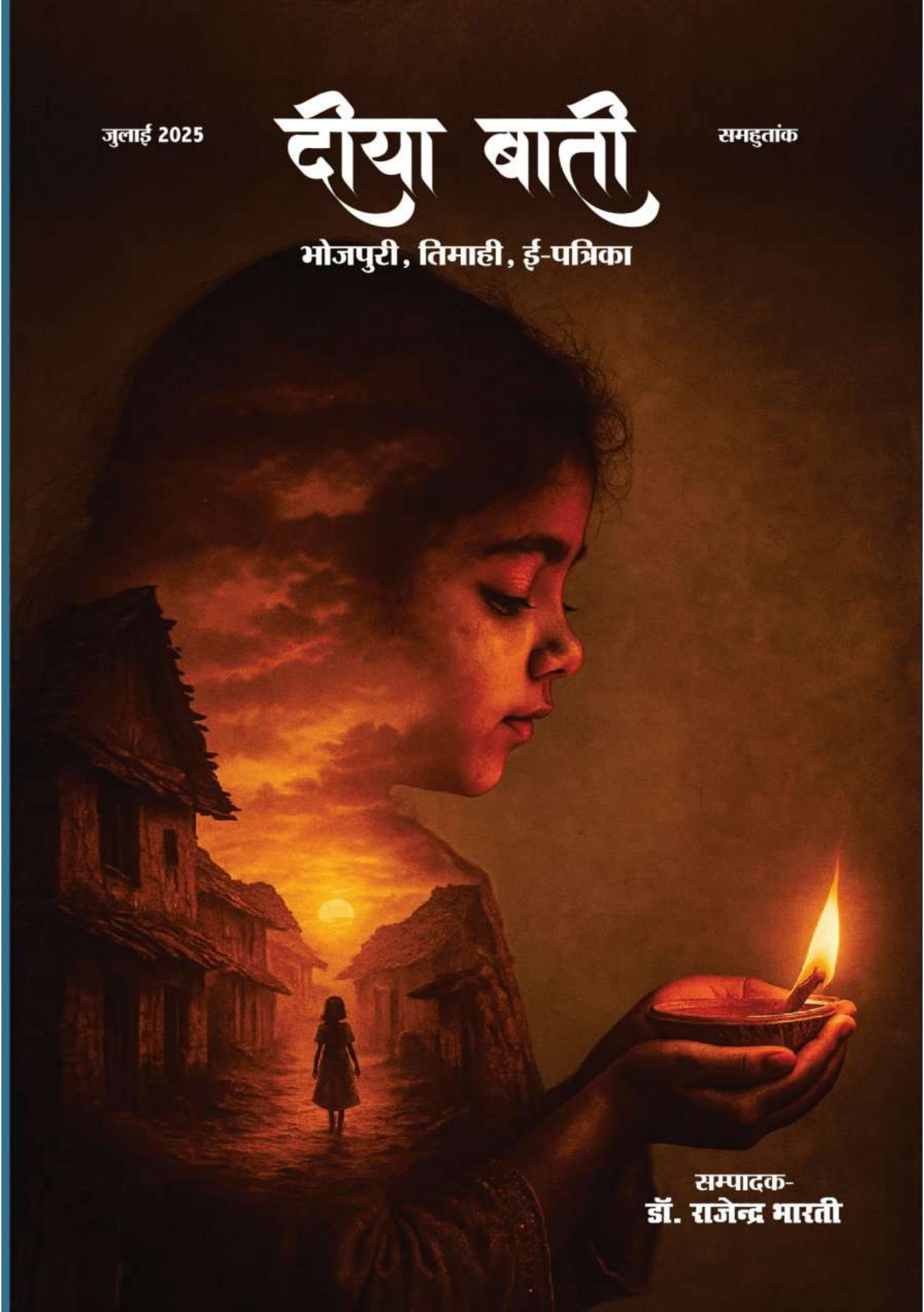

सम्पादक-
डॉ. राजेन्द्र भारती

दीया बाती

समहुतांक

जुलाई 2025

तिमाही, भोजपुरी, ई-पत्रिका

संपादक
डॉ0 राजेंद्र भारती

सह संपादक
डॉ0 कादम्बिनी सिंह

प्रबंध संपादक
सुनील कुमार यादव

ग्राफिक्स
संदीप वर्मा

कंपोजिंग
सुनीता पर्वत

वेबसाइट संचालन
संत प्रकाश शर्मा

कानूनी सलाहकार - एडवोकेट श्वेता पाण्डेय मिश्र

आवरण चित्र
सुनील कुमार शर्मा
सचल दूरभाषः 7355545388

संपादन कार्यालय
C/O भारती दवा केन्द्र
अमृतपाली, सहरसपाली- बलिया
सचल दूरभाषः 7007319538

प्रकाशक- रेयर एयर फाउण्डेशन, बलिया

निहोरा –

अधिक से अधिक भोजपुरिया लोगन तक एह पत्रिका के पहुंच होखे, एकर सार्थक प्रयास के सहयोग चाहीं ।

घोषणा –

1. पत्रिका में छपल लेख, कविता, कहानी, गीत, गजल, निबंध आदि विषय वस्तु के पूरा जिम्मेदारी लेखक लोग के बा । केवनो लेख से पत्रिका परिवार के सहमति होखे, ई जरूरी नइखे ।

2. सब पद अवैतनिक।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. राजेन्द्र भारती

संपादक
दीया बाती
भोजपुरी, तिमाही, ई-पत्रिका

डॉ. राजेन्द्र भारती

सम्पादकीय के बहाने

भोजपुरी के भलाई खातिर

आजु काल भोजपुरी के विकास के नाम पर जगहे जगहे गोष्ठी, सम्मेलन के आयोजन के प्रचलन बढ़ि गईल बा़ बाकिर भोजपुरी के विकास कहीं लउकत नईखे़ भोजपुरी के भलाई के नाम पर आयोजक आपन नाम आगे करे मे लागल बा़

भोजपुरी के सुभचिन्तक लोगन के चाही कि आपन - आपन इलाका मे भोजपुरी के लाइब्रेरी के स्थापना क के भोजपुरी भासी के भोजपुरी पढ़े -लिखे खातिर उत्साहित करी़

भोजपुरी लोकगीत के नाम पर सतही, बिना माने मतलब के अश्लील आडियो बिडियो के बहिस्कार जरूरी बा़

भोजपुरी के मान प्रतिस्ठा खातिर भोजपुरिया भाई के एक होके मैदान मे उतरे पड़ी, खास क के चुनाव के समय सबक सिखावे पड़ी़ रंगीन चश्मा लगाके अलग - अलग रंग मे भोजपुरी के देखे वाला लोग बाज आओ़

भोजपुरी साहित्य समृद्ध हो रहल बा, बाकिर सरकारी ब्यवस्था के शिकार बा, एहसे उबरल, उबारल जरूरी बा़

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया़

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. श्रीपति कुमार यादव

प्रोफेसर

विभागाध्यक्ष- हिन्दी विभाग

सतीश चन्द्र कॉलेज, बलिया

डॉ. श्रीपति कुमार यादव

शुभकामना संदेश

हमरा ई जानि के खुशी हो रहल बाटे कि भोजपुरी भाषा के ई पत्रिका 'दीया बाती' के पहिला अंक के प्रकाशन हो रहल बा । एह पत्रिका के प्रकाशन से भोजपुरी भाषा के सांस्कृतिक, साहित्यिक रूप के निखरे के अऊर गति मिली ।

ई पत्रिका 'दीया बाती' के संपादक डा़ राजेन्द्र भारती जी के ए नेक काम अऊर पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य खातिर ढेर सारी शुभकामना हम देत बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

सत्ताइसवाँ सत्र
Twenti Seventh Session
पंजीयन संख्या-160/73-74

दूरभाष : 9430054236
8210409370
7488489031
E-mail : mptanor@gmail.com
bbmishra1954@gmail.com
indaiskantsinghas@gmail.com
dic.bhojpuri@gmail.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
Akhil Bharatiya Bhojpuri Sahitya Sammelan

बी-12, आश्रय होम्स, आरा गार्डेन रोड, जगदेव पथ, पटना-14

पत्रांक : 14/27/2023-2025 दिनांक : 08-05-202

आदरणीय भारती जी,

'दीया - बाती' नाम के तिमाही ई - पत्रिका निकाले के जवन सूचना देनी ह, जान के बहुते खुशी मिलल ह। हिन्दी आ भोजपुरी के पत्रिका निकाले के राउर अनुभव पुरान बा। हमरा बुझाता बा कि राउर अनुभव एह पत्रिका के पहचान देवे में सहयोगी रही। प्रयास रहे कि पत्रिका समय से निकले आ भोजपुरी साहित्य के श्रीवृद्धि करे। हमार रचनात्मक सहयोग रही। पत्रिका अपना उद्देश्य में सफल रहे, हमार शुभकामना बा। जय भोजपुरी।

राउर

08.05.2025

(डॉ० ब्रज भूषण मिश्र)
अध्यक्ष

पूर्वा समिति

डॉ. अर्जुन राम केसरी, श्री मूर्तदेव पाठक 'पराग', डॉ. रिपुसूदन प्र० श्रीवास्तव, डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन', श्री गंगा प्रसाद 'अरुण', श्री कनक किशोर, श्री महेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ. कमलेश राय, श्री प्रसेनजीत तिवारी, डॉ. सुभाषचंद्र यादव, ई० राजेश्वर सिंह, श्री उदयनारायण सिंह, डॉ. सौरभ पाण्डेय, श्री अरुण कुमारी तिवारी, डॉ० मधुबाला सिन्हा, श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी (संयोजक)

राष्ट्रीय कार्य-समिति

अध्यक्ष
डॉ. ब्रजभूषण मिश्र
कार्यकारी अध्यक्ष
डॉ. महामाया प्रसाद विनोद
उपाध्यक्ष
डॉ. विष्णुदेव तिवारी, हरेन्द्र कुमार, डॉ. अजय कुमार ओझा
कोषाध्यक्ष
जितेन्द्र कुमार
महामंत्री
डॉ. जयकांत सिंह 'जय'
साहित्य मंत्री
गुलरेज शहजाद
प्रकाशन मंत्री
ज्योतिष पाण्डेय
संगठन मंत्री
कौशल मुहब्बतपुरी
प्रचार मंत्री
राजेश भोजपुरिया
प्रबंध मंत्री
अंकुश्री
कला मंत्री
मनोज भावुक
कार्यालय मंत्री
दिलीप कुमार

सदस्य कार्य-समिति

राय बहादुर राय, मृग लाल शाम्भी, वीणा पाण्डेय भारती, माधवी उपाध्याय, अरविंद श्रीवास्तव, डॉ. रविकेश मिश्र, डॉ. राजेश कुमार मौर्य, डॉ. ओम प्रकाश राजपुरी, डॉ. जगमोहन कुमार, डॉ. विक्रम कुमार सिंह, प्रकाश प्रियांशु

मीडिया-कोषाग्र

शिवानुग्रह नारायण सिंह, डॉ. रंजन विकास (साहित्यांगन), प्रमोद कुमार सिंह

विधिक सलाहकार

चन्द्रशेखर सिंह, अधिवक्ता (उच्च न्यायालय)

प्रदेश इकाई संयोजक

विनोद कुमार सिंह (छत्तीसगढ़), मनोकामना सिंह 'अजय' (झारखण्ड), उमाशंकर राय (कानपुर उ.प्र.), हरेन्द्र कुमार सिंह (चंडीगढ़), संतोष कुमार महतो (पूर्वोत्तर भारत असम),

भोजपुरी संघर्ष वाहिनी संयोजक

अजय सिंह (दक्षिण बिहार), लाखन सिंह (झारखण्ड)

www.bhojpurisahityangan.com

कहवां का बा

शीर्षक	पन्ना क्रमांक
निबंध-	
1. अनगढ़ हीरा (आशीष त्रिवेदी)	01
2. तिलकहरू (भगवती प्रसाद द्विवेदी)	04
3. शिक्षा सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था के आधार (डॉ. ब्रज भूषण मिश्र)	08
कहानी-	
1. पतवार (डॉ. गजाधर शर्मा 'गंगेश')	11
2. प्रबंधन सूत्र (कनक किशोर)	20
3. बहारन मरि गइलें (विंध्याचल सिंह)	23
कविता-	
1. दिल के बात (मोहन जी श्रीवास्तव)	27
2. शंख फूंकी कृष्ण (उमेश कुमार पाठक 'रवि')	28
3. मेहनतकस किसान (जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप')	31
4. बाबू जी के पगरी (श्वेता पाण्डेय 'खुश्बू')	33
5. एह समय में (आरती पाण्डेय)	36
6. धरती के हरा बनाई (फतेहचंद 'बेचैन')	38
7. लइका सयान हो गइल (विजय मिश्र)	39
गीत-	
1. मितवा (शिवजी पाण्डेय 'रसराज')	41
2. भाषा भोजपुरिया (विनोद कुमार यादव 'विमल')	43
3. चिंता (अनिल ओझा 'नीरद')	47
4. तब जानबि (रामरक्षा मिश्र 'विमल')	49
गज़ल-	
1. जिनगी (रामनाथ यादव 'बेखबर')	53
2. भोजपुरी गज़ल (डॉ. कादम्बिनी सिंह)	57
3. भोजपुरी गज़ल (शशि प्रेमदेव सिंह)	58
4. बुढ़ारी (श्वेता राय)	60
5. भोजपुरी में गज़ल सुनाई (निर्मल चौधरी)	62
लघु कथा-	
1. हमरा के नइख चिन्हत, ट्रांसफार्मर ना लागी (राजेश भोजपुरिया)	63
समीक्षा-	
1. ऊसर के फूल (डॉ. विष्णुदेव तिवारी)	66
सिनेमा-	
1. काल्पनिक दुनिया में भटक गइल भोजपुरी सिनेमा के गाड़ी (अमित पाण्डेय)	69
व्यंग्य-	
1. चलत गाड़ी राम भरोसे (सुनील कुमार यादव)	72
विविध-	
1. बरसाना क बहादुर बिटिया (देव कुमार सिंह)	74
2. बलिया जिला के तीन गो अउरी जाग्रत मंदिर (डॉ. विनय बिहारी सिंह)	76

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

आशीष त्रिवेदी

सचिव

संकल्प साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था
बलिया
सचल दूरभाष- 9918377816

आशीष त्रिवेदी

अनगढ़ हीरा

कला, कला खातिर ना बलुक जीवन के खूबसूरत बनावे खातिर ह । अपना कला के माध्यम से कलाकार समाज के कवनो दिशा नइखे देत, समाज के आगे बढ़ावे में कवनो योगदान नइखे करत त ओह कला के कवनो मतलब नइखे । ऊ खाली नाच - गाना तक सीमित रहि जाले । कला के सामाजिक सरोकार होखे के चाहीं । अइसने सामाजिक सरोकार से जुड़ल भोजपुरी के एगो कलाकार रहले भिखारी ठाकुर । जिनका के सही मायना में सांसेंतिक योद्धा कहल जा सकेला ।

भिखारी ठाकुर जी गीतन आ नाटकन के जरिये समाज में घटित हो रहल आ बाद में घटित होखे वाला घटनन के बारे में जवन चित्रण कइले बानी ऊ ना खाली समाजिक सरोकार से जुड़ल बाकी ऊ सामाजिक आंदोलन के एगो हथियार बनि गइल ।

कुतुबपुर (सारण, बिहार) के दलसिंगार ठाकुर आ शिवकली देवी के बेटा भिखारी ठाकुर के जन्म 18 दिसंबर, 1886 ई0 के भइल रहे । किताबी ज्ञान ना के बराबर ।

कुछ दिन तक पारिवारिक पेशा में रहलन । बाबू जी के संगे गांव के लोगन के हजामत बनवलन । पहिले गांव के ठाकुरे लोग नेवता बांटे के काम करत रहे । ऊहो एह काम में लाग गइलन । परिवार खुश रहे कि घर के सवांग आपन जातिगत पेशा में लाग गइल बाड़न । बाकिर उनका पढ़े ना आवत रहे, जेकर से उनका नेवता बांटे में बहुत दिक्कत होखे । ऊ दोसरा केहू से नाम - पता पढ़ा के नेवता बांटत रहस । एहसे नेवता बांटे में कबो - कभार गलतियो हो जात रहे । दोसरा से बेर - बेर नेवतहरिन के नाम - पता पढ़ा - पढ़ा के नेवता बांटल उनका बाउर लागे । पढ़ल - लिखल ना रहला के कमी भिखारी ठाकुर के मन के कचोटे लागल । लड़िकाईं में देर से स्कूल गइला आ उहंवा जाके पढ़ ना पइला के दुख से मन में धक्का लागल । ओकरा बाद उनका मन में अच्छर - ज्ञान अर्जित करे के लालसा जागल । बाकिर पढ़े खातिर अब स्कूल गइल संभव ना रहे । मन में इहो भाव रहे कि अब स्कूल गइला पर लोग का कही ! बाकिर अच्छर - ज्ञान पावे के ललक उनका मन में रचि बस गइल रहे । एह काम खातिर ऊ गांवे में एगो गुरु खोज लेहलन । गांव में एगो बनिआ रहस, जेकर नाम भगवान रहे । भिखारी ठाकुर उनका लगे बइठत रहस । उनके के गुरु बना के ऊ ककहरा सिखलन आ चिट्ठी - पतरी बांचे लगलन । भगवान बनिआ के संगत उनका जिनिगी के एगो बहुत बड़ा संजोग साबित भइल । गांव में हजामत बना के टिपटाप में रहे वाला बहुत कम लोग रहस । जेकरा गांवे में रहे के रहे, ओकरा बढ़ल केस - दाढ़ी के परवाह ना रहे । एह से गांव में गहंकी के कमी रहे । भिखारी ठाकुर कमाये खातिर घर से भाग के खड़गपुर चल गइलन ।

''अलप काल में लीखे लगली, तेकरा बाद खड़गपुर भगलीं ।
ललसा रहे जे बहरा जाईं, छुरा चला के दाम कमाईं ।।''

पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में कुछ दिन रहला के बाद भिखारी ठाकुर मेदनीपुर चल गइलन ।

www.bhojpurisahityangan.com

दशहरा के बेरा ऊहंवा रामलीला होत रहे । अपना संगतिआ के साथे उहो रामलीला देखे गइलन । रामलीला के पात्रन के अभिनय देख के उनका लागल कि ई काम त उहो कर सकत बाड़न । ओही घड़ी उनका मन में अभिनय के ले के रुझान पैदा भइल । ओकरा बादे उनकर कलाकार बाहर निकल आइल ।

''गइली मेदनीपुर के जीला, ओजिये कुछ देखलीं रामलीला ।
ठाकुर दुअरा उहां से गइली, चनन तालाब समुद्र नहइली ।
दरसन करि डेरा पर आईं, खोलि पोथी देखी चउपाई ।
अरथ पूछि - पूछि के सीखीं,
बौहा छनव निज हाथ से लीखी ।।''

मेदिनीपुर में रामलीला देख के प्रभावित भइला पर भिखारी ठाकुर वापस अपना गांव चल अइलन। बगल गांव के उनकर एगो मित्र रहस, जिनकर नाम रामानंद सिंह रहे । भिखारी ठाकुर उनके साथे रामलीला खेलल शुरू कइलन । ऊ रामायण प्रसंग पर नाटक प्रस्तुत करे लगलन । बाकी समाज में फइलल जातिगत ढ़कोसला, दुराचार, लालच आ समाज में असंगत बेवहार उनका बड़ा खटकत रहे । जब - जब उनका मोका मिलत रहे, ऊ गीत आ नाटक के माध्यम से समाज में फइलल कुरीतियन के तूड़े के भरपूर कोशिश कइलन ।

कला के कहीं विधिवत प्रशिक्षण ना रहे तबो सामाजिक सांसेंतिक मूल्यन के अपना कला के चरम पर ले जाके प्रस्तुत करस । धीरे - धीरे उनकर कार्यक्रम में खूब भीड़ जुटे लागल आ लोग उनका के एगो लोक कलाकार के रूप में पहचाने लगलन ।

''निजपुर में करिके रामलीला, नाच के तब बन्हली सिलसिला ।
तीस बरिस के उमिर भइल, बेधलसि तब कलिकाल के मइल ।
नाच मंडली के धरि साचा, लेकचर दीहीं कहि रघुनाथा ।
बरजत रहलन बाप - मतारी, नाच में तू मति रह भिखारी ।
चुपके भाग के नाच में जाई, बात बना के दाम कमाईं ।''

समाज में फइलल कुरीतिअन, बुराई, जाति - पात, ऊंच - नीच, पारिवारिक रिश्ता के बाजारूपन आ पारिवारिक विघटन, अंधविश्वास, महिला उत्पीड़न, बाल विवाह के विंत रूप के भिखारी ठाकुर अपना गीतन आ नाटकन के जरिये समाज के सामने उजागर कइलन । उहां के समाज के रीति - रिवाज, उतार - चढ़ाव, भेद - भाव, चाल - चलन के बड़ा साफ चित्रण कइले बानी । उनकर प्रस्तुति में उठावल गइल सामाजिक समस्या कमोबेस आजो समाज में बरकरार बा ।
सैकड़ों गीतन आ एक दर्जन से अधिक नाटकन के रचना करे वाला भिखारी ठाकुर अपना जीवन काल में ही किंवदंती बन गइल रहनी ।

भिखारी ठाकुर के रचना बिदेसिया खूब चर्चित भइल । गांव - जवार से कमाये खातिर परदेस चल गइल युवक के पलायन के दर्द आ परदेस गइला पर मेहरारू के का हाल हो जाला, एकर वर्णन उहां के आपन षबिदेसियाष नाटक में कइले बानी ।

परदेश गइला पर अइसन ना होखत रहे कि उहवां जाते - जाते भरपूर कमाई कइके लोग मालामाल हो जाए । लोग आपन हित - मित्र के साथे जात रहस आ उनके किरपा आ संगत से कुछ दिन में

www.bhojpurisahityangan.com

कहंई कवनो काम मिल जात रहे । मरद आपन पेट पालत आ पईसा - पईसा जोड़त ढेर दिन ले घरे ना आवत रहस । एने मेहरारू बियोग में रहे लागत रहे ।

''करि के गइलन बलमुआं निरासा,
गवना करा के संइया घरे छोड़ि दिहलन,
गइलन बिदेस हमके करि के बेकासा ।''

बिआह के बाद कुछ दिन लोग घरे रह पावत रहे । जिम्मेदारी बढ़ते लोग कमाये खातिर परदेस चल जात रहे । परदेस श्गइल मरद के नया मेहरारू के मन में तरह - तरह के भाव उठेला ।
ष्गवना कराई सैंया घर बइठवले से, अपने लोभइले परदेस रे बिदेसिया । चढ़ती जवनिया बैरन भइली हमरी से, के मोरा हरिहें कलेस रे बिदेसिया ।।''

''कहत भिखारी नाई आस नइखे एको पाई।
हमरा से होखे के दीदार हो बलमुआ ।।

(बिदेसिया) नाटक के धूम देशे ना, विदेशों में भइल । उनकर 'बिदेसिया' नाटक भोजपुरी भाषा खातिर एगो बड़हन धरोहर हो गइल बा ।

बिदेसिया के अलावा उहां के चर्चित नाटक बेटी बियोग आ गबरघिचोर भइल ।बेटी बियोग में जहां कम उम्र में लड़किन के शादी के बहाने समाज के सामने एगो मिसाल प्रस्तुत कइनी । इ नाटक सामाजिक बदलाव में आपन बहुत बड़ योगदान दिहलस । गबरघिचोर अपना समय से बहुत आगे के नाटक बा । एह में स्त्री के कोख पर अधिकार के सवाल उठावल गइल बा ।

बिना पूरा शिक्षा पवले विशुद्ध भोजपुरी भाषा में भिखारी ठाकुर जवन लिखलन, गवलन आ मंच पर उतार देहलन, ऊ भोजपुरी भाषा आ लोकरंग के इतिहास में एगो बड़हन उपलब्धि के रूप में अंकित भ गइल बा । भोजपुरी भाषा में देहल उनकर उपलब्धि देश से बाहर विदेशों में फइल चुकल बा । भिखारी ठाकुर समाज के अकुश से बिना डेरइले खुल के लिखलन, खूब निभवलन । अपने अनपढ़ होके प्रस्तुति के ऊ अनगढ़ ना होखे दिहलन । इहे अंदर के कलाकारी ह जवन उनका में कूट - कूट के भरल रहे । महा पंडित राहुल सोंत्यायन जी उहां के भोजपुरी के एगो अनगढ़ हीरा कहनी ।

www.bhojpurisahityangan.com

भगवती प्रसाद द्विवेदी

सर्जना, सृजनशील कालोनी, बिस्कुट फैक्ट्री रोड,
निकट मगध आईटीआई, नासरीगंज, दानापुर,
पटना - 801503 (बिहार)
सचल दूरभाष- 9304693031

भगवती प्रसाद द्विवेदी

ललित निबंध

तिलकहरू

शादी-बियाह के लगन शुरू होते तिलकहरू लोग मंडराए लागेला । का गांव, का कस्बा आ का शहर ! जेकरा-जेकरा घरे शादी-बियाह जोग नवही रहेलन, उहवां तिलकहरू के इंतजार होखे लागेला । जवना घर में गूर होई, उहवां त चिउंटा लगबे करिहन स । कहल जाला वर-कन्या अनेक जग माहीं ! इहो कहाला कि वर आ कनिया के जोड़ी ऊपरे से बनिके आवेला । बाकिर केहू-ना-केहू मिलावे वाला त चाहीं । ओइसे एगो लोकोक्तिओ कहाला-राम मिलवलन जोड़ी, एगो आन्हर, एगो कोढ़ी !

जब बियाह जोग लइका का दुआर पर कवनो तिलकहरू आवेला, त अइसन लागेला जइसे कवनो कंगाल के भागि खुलि गइल होखे आ लाटरी के टिकट पर इनाम मिले वाला होखे । तिलकहरू के आगम से अइसन जनाला जइसे कवनो किसान के फसिल के उचित मोल लगावे वाला महाजन आ गइल होखे । ओइसे तिलकहरू आ नसीब के कवनो ठेकान ना होला कि कब आके टपकि परे आ बाट जोहत बबुआ के माथे मउरि चढ़ि जाउ, हाड़े हरदी लागि जाउ !

तिलकहरू जब बेटहा के दुआर पर जाला त ओकर भेसभूषा देखते बनेला । भलहीं घर में भूंजी भांग ना होखे, बाकिर ठाट-बाट बनाके ऊ लइका देखे जाई । कहलो जाला कि भेखे भीख मिलेला, ए से भाड़ा के गाड़ी होखे भा किराया के कपड़ा-लत्ता, कवनो हाल में बेटहा के दिल जीतल ओकर मकसद होला । काम परेला त गदहो के बाप कहहीं के परेला । इहां त बेटहा से किछु सांच आ किछु झूठ बोलिके आपन बेटी देबे के बा,यकनियादान करे के बा । जंग आ परेम में सभे किछु जायज होला नू ?

बाकिर तिलकहरू लइका खोजे अकेले ना जाला । ओकरा संगें एगो बिचवानो होला, जवना के अगुवा कहल जाला । अगुवा नांव के जीव लइकीवाला आ लइकावाला-दूनों से कवनो-ना-कवनो किसिम से जुड़ल होला । दूनों पच्छ के अंदरूनी हालात से ऊ बखूबी वाकिफ होला । खूबी आ खामी-दूनों के चीन्हि के ऊ मोलभाव करेला । दरअसल अगुवा अइसन तरजूई होला, जवना के एगो पलड़ा पर बेटिहा आ दोसरा प बेटहा जोखाला । अगुवे दूनों पलड़ा के संतुलित करे में अगहर भूमिका निबाहेला । हालांकि आगा चलिके दूनों पच्छ रिश्ता में आइल कवनो झोल खातिर अगुवे के दोषी ठहरावेला आ आखिरकार ओकर हाल सांप-छुछूंदर के हो जाला-ना घोंटते बनेला, ना उगिलते । मियां-बीवी राजी, त का करिहें काजी !

www.bhojpurisahityangan.com

जब हीत-नात नीमन मिलि जाला त ओकर श्रेय तिलकहरू लोग खुद के देला आ जदी कनिया के ससुरा में सांसत भा दुख-तकलीफ झेले के परेला त अगुवा के कोसे, गारी-फजीहत देबे-करे के अंतहीन सिलसिला शुरू हो जाला । ओने बेटहो हर फरमाइस पूरा ना भइला पर अगुवे के दोषी ठहरावेला । तिलक का दिनहीं गीत गावेवाली मेहरारुन के सुर फूटेला-

सोना के जेवर करार कियो रे अगुवा बैमान,
पीतर के जेवर चढ़ा दियो रे अगुवा बैमान !
ठग लियो लड़का हमारा रे अगुवा बैमान !

तिलक चढ़ावे खातिर पहुंचल तिलकहरुओ के कहां छोड़ल जाला ! अइसन लागेला जइसे ऊ बेबोलवले अचके धमकि परे वाला मेहमान होखेम । गीतगवनी लोग फरमावेला-

अइसन आन्हीं धुक्कड़ में
तिलकहरू साला आयो रे !

तिलक चढ़ावे गइल लरिकी पच्छ के मए लोग तिलकहरू कहाला आ तिलक का दिने ओह लोग के खूब खातिरदारी होला ।
कहां उठाईं, कहां बइठाईं ! जलखई से लेके खानपान ले बढ़ि-चढ़ि के आवभगत होला ।

हीत-नात आ गांव-जवार के लोगो खातिरदारी में इचिको कोताही ना बरते । तड़क-भड़क आ झूठ-सांच देखाके बेटिहा पच्छ से अधिका से अधिका रस निचोड़े के दियानत जे रहेला ! दुधारि गाय के दूगो लातो भला !

पहिले जब तिलकहरू लोग तिलक चढ़ावे पहुंचे त नगद आ दहेज के तय रकम ओही दिने चढ़ावल जात रहे । कई बेर लइकी के बाप वादा कइल रकम से कम रकम के जोगाड़ बइठा पावत रहे आ ओइसना हाल में कमे तिलक चढ़ा देत रहे, तबो बीच-बचाव कऽ के ममिला सलटि जात रहे आ दूनों के गणमान्य लोग के समुझावल-बुझावल बात बेटहा मानि जात रहे । किछु देरी ले रंग में भंग भलहीं होत रहे, बाकिर आखिरकार हंसी-खुशी से तिलकहरू लोग के विदाई होत रहे । अंत भला तऽ सब भला !

बाकिर जब से तिलक-दहेज के खिलाफ सख्त कानून बनल, तिलकहरू लोग के मुसीबत अउर बढ़ि गइल आ बेटहा के अउर आसानी हो गइल । अब लइका-लइकी के बियाह तय होत कहीं कि मुकम्मल तय तिलक-दहेज के रकम अगवढ़े गिना लिहल जाता । चेक-ड्राफ्ट का जगहा एकदम नगद । तूं डाढ़-डाढ़, त हम पात-पात ! जदी अइसे ना, त लइकिएवाला
होटल बुक करे, बैंड-बाजा, गहना-गुरिया, जनवासा, सजावट, केटरिंग, स्वागत-सतकार, कपड़ा-लत्ता से लेके आवागमन, नाश्ता-भोजन सहित पंडित-पवनी के खरच-बरच ले, ए से जेड-तमाम इंतजाम करे । वर

www.bhojpurisahityangan.com

पच्छ ठाट से बरियात लेके जाई, पिकनिक मनाई, ना हाथ मइल ना गोड़ मइल, बस रोआब झारत रही। बेटीवाला लरिकी जनमाके जब अपराध (!) कइले बा, त ओकर खामियाजा के भोगी ? हालांकि बेटी-बेटा सभका बा, बाकिर बेटा के बाप ई बात भुला जाला कि ऊहो कबो बेटी के बियाह के बखत सांसत झेलले रहे आ ए से ऊ बेटीवाला के पीरा के एहसास करो। उलुटे ऊ बदला लिहल चाहेला आ जतना खरच कइले रहे, ओसे कई-कई गुना वसूलेला। मोका मोका के बात ह। कबो गाड़ी नाव पर, त कबो नाव गाड़ी पर !

आजुकाल्ह जब नेह-नाता बैपार हो गइल बा, त वर-कनिया के रिश्ता जोड़हूं खातिर किसिम-किसिम के बैपार खूब फरत-फूलत बा। शगुन के विचार करे वाला कम्प्यूटरींत जोतिसी से लेके मैरेज ब्यूरो नियर दलाल, मैरेज हॉल, मंडप, केटरर वगैरह जवन किछु चाहीं, घर बइठल हाजिर बा। बस, पइसा फेंकऽ, तमासा देखऽ !

अब तिलकहरू के भला का जरूरत बा।
लइका-लइकी श्आइ लव यूश् के राग उचरले,

डेटिंग कइले आ चट मंगनी पट शादी हो गइल। हर्रे लागल ना फिटिकिरी आ रंगो चोखा हो गइल। बाकिर अइसन कई गो बियाह बियाधि बनि जाता आ चार दिन के चाननी साबित होता। लइकी के मनमाफिक चाह जब पूरा नइखे होत, त तनी-तनी बात के लेके ममिला पुलिस थाना आ कचहरी में चलि जात बा आ लइका का संगें ओकर बाप-महतारी, समूचा परिवार गहूं का संगें घुन लेखा पिसात बा। जिनिगी नरक बनि जात बा आ एक-दोसरा से पिंड छोड़ावे खातिर खूब मोलभाव होत बा। तबे बियाह के मजा ओह मथुरा के पेड़ा नियर आवता, जेकरा के खइलो प पछतावा आ ना खइलो प पछतावा।

आजु के नेह-नाता के बैपारी पारम्परिक बियाह आ तिलकहरू के मरम का बुझिहें !

गांव में आजुओ तिलकहरू के महातम बा।

जेकर बबुआ पढ़ि-लिखिके बढ़िया रोजी-रोजगार में लागल बाड़न, उन्हुका इहां तिलकहरुन के तांता लागल बा आ जेकर लइका बेरोजगार बा, ओकर उमिर ढललो पर तिलकहरू के नजर ओने नइखे जात।

आजुओ तिलकहरू बेटहा किहां जाके नीमन-नीमन मिठाई चाभऽ तारन, लइका के राशि के नांव लेके पंडीजी से लरिका-लरिकी के गनना मिलवावत बाड़न, जानल चाहत बाड़न कि कतना गुन गनना बनत बा, गोत्र आ नाड़ी मिलत त नइखे ? कई बेर गनना त छत्तीसो गुन मिलता, बाकिर मन ना मिलला से निरासा हाथे लागत बा। आखिर कब ले शादी-बियाह में माल-गोरू लेखा कीने-बेचे के आ एक-दोसरा के ठगे के सिलसिला चलत रही आ वर-कनिया कोट-कचहरी के चक्कर में अपना-अपना जिनिगी के सोनहुला समय-सपना बरबाद करत रहिहन ? समझौतावादी नजरिया अपना के एक-दोसरा के समुझे आ बिसवास जीति के सुखमय जिनिगी जीए के सबक तिलकहरुओ देलन, अगुवो देलन आ कोटो-कचहरी के मध्यस्थो

www.bhojpurisahityangan.com

देलन, बाकिर वरे-कनिया एह दिसाईं गठजोड़ाव के अटल आ अटूट बना सकेलन । बहरहाल, फेरु कतने जवान नर-नारी के शगुन चरचरा रहल बा, तिलकहरू लोग के धूम मचल बा,

सगाई, तिलक, बरियात, बैंड बाजा आ शहनाई के मीठ सुर में माहौल खुशनुमा हो उठल बा । रउओं एह सरसता में डुबकी लगाईं आ गीत-संगीत के आनंद लेत नेग देबे-लेबे में शामिल होत मुबारकबाद आ शुभकामना दिहीं-लिहीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. बृज भूषण मिश्र

अध्यक्ष

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

सवल दूरभाष- 9905030520

डॉ. बृज भूषण मिश्र

शिक्षा सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था के आधार

जीवन के मूल आ मजबूत आधार शिक्षे ह । बिना शिक्षा मनई के जीवन बेमतलब आ दिशाहीन हो जाला । कवनों काज-परोजन के ठीक-ठाक ढंग से पूरा करे आ सफल करे में, सही दिशा में उतजोग करे के पड़ेला । सही दिशा का होई ऊ हमनी के बुद्धि-विवेक पर निर्भर करेला । बुद्धि-विवेक खातिर अपना अंतरूकरण में ज्ञान संचित होखे के चाहीं । आ ज्ञान हमनी का शिक्षा से मिलेला । शिक्षा व्यापक रूप से मानव समाज के विकास आ प्रगति के कारक ह । ई एगो अइसन प्रक्रिया ह, जवना से ज्ञान, सूचना आ कौशल मिलेला । आ ई एगो सतत प्रक्रिया ह, जवन एक से दोसरा, दोसरा से तिसरा आ अइसहीं आगे दियात चलेला । ई शिक्षा हमनी का नैसर्गिक रूप से, अपना माता -पिता-गुरुजन से, समाज से आ अपना अनुभव से मिलेला । शिक्षा के जरिये हमनी कवनो काज के सही रूप में, सही ढंग से कर सकिलेय बलुक गलत तरीका आ गलत रूप से करे में बंचियो सकिले । सही ढंग से शिक्षित बेकती अपना आचरण आ व्यवहार से, अपना संस्कारित जीवन से आपन जीवन त सही ढंग से संचालित करबे करेला, बलुक घर, परिवार, समाज, देश सबके उन्नति, बढंती में आपन बड़हन भूमिका निबाहेला । ई एगो अवश्य वस्तु ह, जवना के दान दिहल जा सकत बा, बाकिर एकरा के चोरावल नइखे जा सकत ।

अइसे त शिक्षा आ विद्या के बीच विद्वान लोग अन्तर मनले बा, बाकिर एह में बहुत कुछ समानता बा । कहल बा कि बिद्या दिहला से बढ़ेला । विद्या प्राप्त करके बहुत कुछ पावल जा सकेला । बड़ा प्रसिद्ध सूक्ति बा - 'विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम् । पात्रत्वाम् धनमप्राप्ति, धनात धर्मं ततः सुखम् ।' अर्थात, विद्या से विनय मिलेला, विनय से पात्रता मिलेला, पात्रता से धन प्राप्त होला आ धन से धर्म मिलेला, जवना से सब सुख प्राप्त कइल जा सकेला ।

बड़हन अर्थ में विकसित जीवन आ छोटहन अर्थ में कवनो निश्चित प्रणाली के अंतर्गत जीवन के तैयारिये शिक्षा ह । शिक्षा के बात आवेला त हमनी का विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल देखाई पड़े लागेला । शिक्षण संस्थान सब के महत्व तब बढ़ जाला, जब ऊ अपना समाज के विकास में अहम भूमिका निबाहेला । भारत के प्राचीन शिक्षा पद्धति में एही से गुरुकुल सब के सबसे बेसी प्रतिष्ठा रहे । गुरुकुल में विद्यार्थी लोग का अक्षर ज्ञान के संगे-संगे परम्परा के जीवंत राखे, ओकरा के अउर निखारे आ समाज के सुरक्षा के शिक्षा दिहल जात रहे । हमनी के संसेंति में शिक्षा के उद्देश्य शिक्षार्थी के ज्ञान विज्ञान से पूर्ण कइला से कहीं अधिका चरित्र आ भाव संवेदना के परिष्कार कइल रहे । जीवन के सफलता के खाली अर्थ के उपार्जन से देखले ठीक ना मानल जात रहे । सही से अपना प्रतिभा आ क्षमता के विकासे जीवन के सफलता के कसउटी होखे के

www.bhojpurisahityangan.com

चाहीं । जब प्रतिभा आ क्षमता बढ़ी त उहे आजु ना त बिहान जीवन में सफलता के नया-नया राह खोल सकत बा । ओकर भाव संवेदना ओकरा जीवन के दिशा आ धारा तय कर सकत बा ।

बाकिर ई जरूरी नइखे कि शिक्षा संस्थान में पढ़ल लोग सुशिक्षित होखबे करी । सुशिक्षित उहे होई जे प्राप्त शिक्षा के आत्मसात करे, जीवन में उतारे आ ओही पर चल के आपन जीवन सुधारे आ जीवन व्यवस्थित करे । जीये खातिर त सब प्राणी जियबे करेला, बाकिर जीवन के कलात्मक, सुंदर आ सुखमय बना के एह तरह जीये कि दोसरो लोग के ओकरा से प्रेरणा मिले, सीख मिले, जीवन कला जान सके । जीवन कला से मतलब ई बा कि ऊ जीवन पद्धति, जवना से मनई निरोगी रहे, सच्चाई, सुनरपन आ सुघर व्यवस्था से जीवन बितावे । ओकर बोली बानी मीठ आ सरस होखे, ओकर रहन-सहन, पहिरावा-ओढ़ावा देखनउक-शोभनउक होखे आ चरित्र सात्विक होखे । शिक्षा बेकती के व्यक्तिगत आ सामाजिक दुनों पक्ष के उन्नति खातिर मनोवैज्ञानिक नजरियो से पूरा अनुकूल बा । जीवन के हर एक अनुभव जे जीवन के एक एक क्षेत्र में मिलेला, ओकरा से शिक्षा मिलेला । एह प्रकार से देखल जाए त लइकनो से भी माता-पिता गुरु शिक्षा पावेला । पालतू मवेशियो आ जानवरो से शिक्षा पावल जा सकत बा । हमनी का जवन कुछ कहिले, सोचिले, सुनिले, करिले आ अनुभव करिले, ओह सबसे कवनो ना कवनो शिक्षा मिलेला । उचित अनुचित के निर्णय करे में बनेला । एह से खाली शिक्षक द्वारा मिलल आ किताबन में पढ़ के जानल बात शिक्षा ना ह । बड़हन अर्थ में सोचल-विचारल जाय त मनई के पूरा जीवने शिक्षा ह आ शिक्षे जीवन ह। जवने कुछ व्यवहार हमनी के ज्ञान के परिधि के बिस्तार देवेला, हमनी के भितरिया ॐष्टि के गहिर-चाकर करेला, हमनी के प्रतिक्रिया के परिष्कार करेला, हमनी के भावना आ क्रिया के जगावेला चाहे कवनो ना कवनो रूप में प्रभावित करेला, विभाजित करेला, ऊ हमनी के सिखइबो करेला ।

शिक्षा वास्तव में अपना व्यापक अर्थ में ओकरा से बेसी काम करेला । एकरा भितरी उहो सब प्रभाव आ जाला जे ओह सब वस्तु के द्वारा मानवीय चरित्र आ शक्ति के प्रभावित करेला । एकर सीधा प्रयोजन कुछ दोसरे होखेला, मतलब कि मनई नियम पूर्वक, शासन के रूप से, औद्योगिक कला से, सामाजिक जीवन के रीति से, इह0 तक ले कि ऊ अपना इच्छा से आ पूरा रूप में जलवायु, भूमि आ स्थानीय परिस्थितियन के प्रोंतिक प्रभावो से प्रभावित होखेला । शिक्षा ऊ संस्कार ह, जे प्रत्येक पीढ़ी जान बूझ के अपना वारिसन के एह से सॅउपेला कि ऊ ओकर रछेया करे के लायक बने आ जतना कुछ एह क्षेत्र में उपलब्धि हासिल भइल बा, ओकर स्तर ऊँचा करे ।

एह प्रकार से ई कहल जा सकेला कि शिक्षा संपूर्ण जीवन व्यवस्था के आधार होला । एह बात के बिन्दुवार अइसे जानल जा सकत बा -

- शिक्षा से बेकती के सर्वांगीण विकास होखेला । ई बेकती के सभ्य, परिष्ंत, सुसंस्ंत आ सुशिक्षित बनावेला ।
- शिक्षा से बेकती का ज्ञान, अनुभव कौशल आ साफ आ स्वस्थ दृष्टिकोण मिलेला ।
- शिक्षा से केहू का सही आ गलत के अंतर के समझ विकसित होला ।
- शिक्षा से बेकती के मन, शरीर आ आत्मा विकसित होखेला ।

www.bhojpurisahityangan.com

- शिक्षा से बेकती में देश प्रेम आ तेयाग के भावना आवेला ।
- शिक्षा से समाज में समृद्धि, विकास आ वैज्ञानिक उन्नति होखेला ।
- शिक्षा से समाज तकनीकी, आर्थिक आ सामाजिक रूप से सशक्त बनेला ।
- शिक्षा से समाज का भावी पीढ़ी खातिर ऊँच आदर्श, आकांक्षा, विश्वास आ परम्परा के सॅउपल जा सकेला ।
- शिक्षा से व्यक्ति समाज अउर राष्ट्र के विकास के खातिर समर्पित होला।
- शिक्षा बेकती के आत्म निर्भर बनावेला, सही नीति, मूल्य आ संसेंति के ज्ञान देवेला ।
- शिक्षा से ओह गुण सब के विकास होला जवना से केहू समाज में सफल होला आ ऊ गुण बाड़ें सबुद्धिमत्ता, सहजता, विचारशीलता, संघटनशीलता आ संगठन क्षमता ।

आखिरकार ई कहल जा सकत बा कि शिक्षा बेकती आ समाज का विकास के मजबूत आधार ह । ई कवनो बेकती के जीवन में चुनौती के सामना करे आ अपना आकांक्षा के पूरा करे में ज्ञान, कौशल, आ मूल्य से सशक्त बनावेले । शिक्षार्थी खातिर शिक्षा बौद्धिक विकास, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता आ समस्या के समाधान के क्षमता बेकती में बढ़ावेवाला एगो साधन ह शिक्षा । ई आत्मविश्वास के बढ़ावे वाला आ नैतिक मूल्य के बढ़ावे वाला भी साधन ह ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. गजाधर शर्मा 'गंगेश'

नंदगंज, गाजीपुर

सचल दूरभाष- 8601449738

डॉ. गजाधर शर्मा 'गंगेश'

'पतवार'

अमावस कऽ काली रात अधियाये में अब तनकिये कसर रहि गइल रहे । बिना चनरमा के तरई एतना टहकार लागत रहली स कि जइसे आसमान अनगिनत आंख खोलि के एकटकी नजर से धरती पर केवनो खास होनी होत देख रहल होखे ।

नगेसर के बइठका क बाहरी ओसारी में गीत-गवनई अपना पूरा निखार पर रहे । गावे वाला लोग आपन सुर-ताल मिलावे में आ सुनवइया लोग सुने में मगन रहलन । ऐही बीचे चुपके से बिरजू उठल आ कुछ देर के बाद आके गवनई बीचे में जब रोकवा दीहलस त सब केहू सवालिया नजर से ओके देखे लागल । बिरजू सबके अपना पीछे-पीछे बिना केवनो आवाज कइले आवे के कहलस । सब केहू ओकरा बतवलानुसार उत्सुकता से चल पड़ल । केहू के ई ना पता रहे कि आखिर ऊ सबके लिया के कहां जा रहल बा !बलदेव चौधरी के घर के पिछवारे सबके रोकि के खाली पांच आदमी के अपना साथे लेके आगे बढ़ गइल । श्रीनाथ सिंह क छावनी वाला उत्तरी-पूर्वी छोर पर बनल कोठरी क पास ले जाके पांचो लोगन के पांव दबा के दरवाजा से सटि के कान अड़ाइ के भीतर से आवे वाली आवाज सुने के कहलस । कान देके सुनला पर इ साफ-साफ बुझा गइल कि ओह कोठरी में रमेसरा बनिया के अलावा एगो औरतो बिया, जेकरा साथे ऊं सांय-फुस बतिया रहल बा ।

दूसरा गांव क रहे वाला रमेसरा कुछे दिन पहिले आके इहां दुकान कइले रहे । रंगीला मिजाज क भइला क नाते जेवन कवनो अइसन ओइसन औरत ओकरा दुकान पर सउदा खरीदे जात रहली स, उन्हन से हंसी-मजाक करे आ चारा डालि के अपना जाल में फंसावे से तनिको बाज ना आवत रहे । ओकर ई हरकत गांव क आम मनइन के नागवार लागत रहे । कुछ लोग त ओकरा के रोक-टोक के भलमानुस अस रहे के कई बार चेतावनी भी दे चुकल रहलन । बाकिर ऊ काहे के मानो । कुल कहल-सुनल ओकरा खातिर केवनो माने ना रखत रहे । केवनो बात एह कान से सुनि के ओह कान से निकाल देबे में ऊ आपन बड़वारगी समुझत रहे । कहावत कहल जाले कि पाप क घड़ा जब नखसिख भरि जाला त एक न एक दिन फूटबे करेला । ओह दिन ओके सिखावे के बढ़िया मोका गांव क लोगन के मिल गइल रहे । सबकर मंसा इहे रहे कि सगरो गांव क आगे रमेसरा के नंगा कइके ओकर रहनि सुधरवावे क अब एसे बढ़िया मोका फेर कबो ना मिली ।

'ठक-ठक-ठक -३ ' बिरजू सिकड़ी पकड़ि के कई बार दरवाजा क पल्ला पर पटकलस । बाकिर भीतर से केवनो आवाज ना आइल । जेवन सांय-फुस सुनाई पड़तो रहल उहो थम गइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

'ठक-ठक-ठक3' बिरजू अबकी जोर-जोर से देर तक लगातार दरवाजा पर सिकड़ी पीटते रहि गइल तब जाके भीतर से रमेसरा क आवाज सुनाई पड़ल ।

"के ह ?"
"हम हईं बिरजू ।"
"एह रात के केवन काम पड़ गइल ह ?"
"एक बंडल बीड़ी आ सलाई चाहत बा ।"
"ना ह । ओरा गइल बा ।"
"अरे भाई! इखरल-बिखरल दूइयो-चारि गो मिल जाई त काम चलि जाई ।"
"बेरि-बेरि कहत बानी कि एको ना ह, तबो कपार खइले बाड़ ।"
"कवनो बात ना बा । बीड़ी नइखे त सुरुतिए दे द । चाचा ओही से काम चला लिहें ।"
"साफ-साफ सुन ल । अब एह रात में केवाड़ ना खुली । जेवन चीज चाही सबेरे आ के ले लिह ।"

बाकिर बिरजू क जिद क आगे रमेसरा क एक ना चलल । जब देखलस कि लाख बहाना बनवला क बादो ऊ ना मानी त हार-गुन के देर तक हीलाहवाली कइला के बाद ओइसे आंख मलत दरवाजा खोललस जइसे बहुत गहरी नींद से सो के उठल होखे । दरवाजा खुलते बिरजू क संगे जे-जे आइल रहे ऊं सब अंदर घुस के दुकान में टार्च बारि के तलाशी लेबे लागल । रमेसरा पसीना-पसीना होके धुआंसा चेहरा लेले डरत-सहमत दबल जुबान से पूछलस-

"दरोगा-सिपाही अस ई कइसन दुकान क तलाशी लेत बाड़ जा ?"
"तोरा संगे एह दुकान में एगो औरतो रहल ह न ?"
"औरत ? ई के कहत बा ?"
"केहू कहत ना बा हमनी क ओह औरत क आवाज अपना काने से कुछ देर पहिले खुदे सुनली हं जा ।"
"अगर रहित त कहां चलि जाइत ? एह दुकान में निकले-पइठे वाला एगो एह दरवाजा के सिवा दोसर केवनो खिड़कियो त नइखे जेसे होके बाहर निकल जाइत ।"
"नाहीं, ऐमें औरत जरूर होखे के चाहीं ।"
"तोहन लोग नाहक सक पलले बाड़ जा । अइसन झूठ अछरंग केहू पर ना लगावे के चाही ।" ई बात जेवहीं पूरी भइल तेवहीं बिरजू बोल पड़ल,
"अरे, हऊ का ह ?"

ट0रच क रोसनी में बिरजू क संगे-संगे साथ क पांचो आदमी देखल कि उत्तर-पछिम क कोना में नीचे ऊपर बड़ा जोगाड़ क साथे कलाकारी क के कई गो कलेंडर लगावल रहे । उन्हन क आड़ में से एकदम नीचे औरत क पांव का अंगुरी दिखाई पड़त रहली स । सब केहू एक साथ बोल पड़ल,
"ई त औरत क गोड़ क अंगुरी हई स ।"

ई बात अबहीं पूरो ना भइल रहे कि कैलेंडर हीले लगलन स । बिरुजुआ झपटि के कलेंडरन के नोचि

www.bhojpurisahityangan.com

के फेंकि दिहलस । कलेंडरन के हटते आंचल में मुंह छिपवले एगो औरत दिखलाई पड़ल । डर आ लोकलाज क मारे ओकर तन-मन थर-थर कांपत रहे । बिरजू आंचर क छोर पकड़ि के ठिंठिरावत ले आके बहरा गली में झोंकि दिहलस । सोरगुल सुनि के चौधरी क घर क पिछुवारे जेवन लोग खड़ा रहलन ऊ लोग त आइए गइलन । ओकरा बाद टोल-पड़ोस फेरु गांव भर क बहुते लोग जुट गइलन । पहिले त पंचलत्ती बोलि के रमेसरा के सब केहू मारल । मार खा-खाके जब ऊ पसरि गइल तब सबकर धियान ओह औरत क ओर गइल । लोग ट0रच बारि के देखलन त पता चलल कि ऊ त रामनरायन उर्फ रामा-बो ह । ऊ रामा जे लगभग साल भर पहिले बनि रहल परधान जी क हवेली क तीसरा तल्ला पर से एक दिन गिर के अइसन घायल भइलन कि एक दिन जानो से हाथ धोवेके परल ।

भीड़ रामा-बो के 'छिनार', 'हरजाई' क अलावा न जाने का-का कहत चहुंतरफा गाली पर गाली देत जात रहे आ ऊ बेचारी आंसू क घूंट पी के सब कुछ मौन होके सुनत रहल । ओही बीच गांव क पूजमान दीनदयाल पंडित सबके डांट-दबेर के आ चुप करा के रामा-बो के घर जाए के कहलन । एकर केहू बिरोध करे क हिम्मत ना जुटा पवलस । दूसरी ओर भीड़ रमेसरा के मारत-पीटत जमीन पर थूकवावत-चटवावत रहे । पंडित जी सबके हटा के ओसे कहलन,

"देख रमेसरा ! जब से तूं एह गांव में आइल हउए तबसे हमनी क देखत आ सुनत आ रहल हईं जा कि तोर चाल-ढाल ठीक नईखे । ओमें सुधार ले आवे खातिर कई बेर कई लोगन से चेतावनी दियवावल भी गइल बाकिर तूं ओके गंभीरता से अचिको ना लिहले । अब तक जेवन कइले तेवन कइले । अब तोर एही में भलाई बा कि एही राती ई गांव छोड़ि के चलि जो । आज क बाद जो कबो इहां दिखाई पड़ले त मारत-मारत तोर कचूमर निकाल के गड़हा खोनि के ओही में भठि दीहल जइबे । किस्सा कहल जाला कि 'बकस बिलार मुर्गा बांड़े होके रहिहन ।' पंडित जी क आदेस मिलते ऊ दर-दुकान क मोह-ममता छोड़ि के ओही राते भाग खड़ा भइल ।

ओने राम-बो भीड़ से छुटकारा पा के घर क ओर चलली त उनकर आत्मा उनके खुद धिक्कारत रहे । लज्जा क मारे इहे उनका मन में आवत रहे कि,'कतो जाके डूबि-धंसि जाईं ।' रास्ता में कुआं पड़ल । रामा-बो ओकरा जगत पर जाके अबहीं छलांग लगा के ओमें कुदले चाहत रहली तबले ओही घरी उनके अइसन बुझाइल कि दूनों लइका उनके 'माई रे !' कहि के पुकार रहल होखन स । जेहन में ई विचार अवते कुआं में कूद-मरे क विचार तजि दीहली आ कुआं क जगत पर से उतरि के सीधे घरे गइली । ऊहां जाके देखली कि ताखा पर क दीया क रोसनी तेल क कमी क चलते एतना मद्धिम हो चुकल रहे कि जनात रहे रोवत होखे । रोवे भी काहें ना ! जब घर क मालकिन क अतमे रोवत रहे त ओह घर क मोही-छोही दीया काहें ना रोवे । रामा-बो दीया क टिमटिमात रोसनी में लइकन क ओर निहरली । भूखे पेट रोवत-बिलखत दूनों आंख से गंगा-जमुना अस लोर ढरकि के सूख चुकल रहे । खाली निसान लउकत रहे । पीठ में सपटल पेट पर हाथ धइले दूनों खटिया क पाटी क सहारे भूइयें बइठल-बइठल सूति गइल रहलन स । अपना लइकन क अइसन दीनदशा देखि के रामा-बो क करेजा टूक-टूक होके आंसू बनि के बिखर गइल । कुहुकत करेज लिहले झिलिंगा होके कुआं बनि चुकल झिलिंगा पर गुदरी अइसन लेवा बिछा के बारी-बारी से दूनों के उठा के सुता दिहली आ अपने बगल वाली बंसखट पर निखहरे लेट गइली । तन-मन एतना उखड़ चुकल रहे कि

www.bhojpurisahityangan.com

ओह रात उनका आंखिन से नींद रूठ के सात समुंदर पार जा चुकल रहे । बितल दिनन क खठ-मीठ वाकया धुंधला चलचित्र नीयर यादन क परदा पर आ-आ के लउके लागल ।

'मायके में जब अबहीं छोट रहली त माई-बाबू क पुरहर दुलार-प्यार मिलत रहे । सखी-सहेलियन क संगे गोटी, बिछिया, लुका-छिपी, चोर-सिपाही आ पुतरी-पुतरा क बियाह अस खेल में केतना आनंद आवत रहे । ओही बीचे एक साल गांव में महामारी आइल । जेवना क चपेट में अइला से माई-बाबू सरग सिधार गइलन । ओह लोगन क अभाव में जवन घर-आंगन बेसुमार सुख मुहइया करावत रहे, अब उहे काटे-धावे लागल । भाई-भउजाई के अब ऊ भारी लागे लगली । जेवना क नतीजा ई भइल कि अगले साल हाथ पीला कइके अल्हरे उमिर में ऊ ससुरा भेज दिहल गइली जहां सास-ससुर ना रहलन । उहवों बिआह भइला क कुछे दिन बाद जेठ-जेठानी क अलगिया दिहला से जिनिगी में कुछ सूनापन त जरूर आ गइल रहे । बाकी ओह दौरान पति क एतना प्यार मिलल कि कुल्हि सूनापन मेटि के भरपूर खुसहाली में ढलि गइल । जेवन कोर-कसर रहि गइल रहे, ऊ गदेला-गदेलिन क किलकारी से छू मंतर हो गइल ।

घर परिवार क खुसहाली पर गरहन त तब लागल जब अचानक पतिदेव जी गंभीर बीमारी क सिकार हो गइलन । महीना भर तक झेलावे वाली बेमारी घर क माली हालत एकदम चरमरा दिहलस । दवा-बिरो जोगाड़ खातिर पास-पड़ोस क केवनो घर अइसन ना बचल रहे जहां से हथफेर ना मंगले होंखसु । ओह सेवा-सुसुरसा क ही नतीजा रहे कि ऊ भला-चंगा हो गइलन । बाकिर अबहीं कमजोरी दूर ना भइल रहे । ओकरा चलते बैद जी क सलाह रहे कि कम से कम एक पखवारा तक उनके पुरहर आराम करेके चाही । बाकिर घर का माली हालत उनका से देखल ना गइल । लाख मना कइला क बादो बिना खइले-पीयले ऊ परधान जी केहें मेहनत-मजूरी करे चलि गइलन ।

नीमन से इयाद बा कि ओह दिन उनका गइला क बाद ऊ कुआं पर पानी भरि के जइसहीं उठावल चहली ओइसहीं हाथ से गगरी छूटि के अइसन गिरल कि फुटि के खंड-खंड हो गइल । ओही घरी घर क पटनी पर न जाने कब क चढ़ल बिलार क रोवला क मनहूस आवाजो सुनाई पड़ल । अचानक बायां अंग फड़के लागल । एह सब असगुनन क एके साथे संकेत पा के मन-ही-मन ऊ बुरी तरह कांपे लगली ।

बेर ढरत रहे । ओही घरी एगो मचोलना पर कुछ लोग पतिदेव के छत-बिछत अवस्था में ले अइलन जा आ बतवलन जा कि तीसरा तल्ला से बोझ लिहलहीं ढमिला के जमीन पर आ गिरलन ह । इ सुनि के आ देखि के कुछ छन खातिर त सन्न रहि गइली । लागे जइसे कठवा मारि गइल होखे । समझे में ना आवे कि उनका इलाज खातिर का करसु । उनकर चेतना त तब वापस आइल जब कुछ लोग समझवलन । करेजा पोढ़ क के आंसू पोंछत दवा-दारू आ सेवा-सुसुरुसा करें में लग गइली । दवा-बिरो आ घरेलू खर्च क चलते एक-एक कइके गहना-गुरिया आ बर्तन गिरवी रखात चलि गइल । बाकिर पतिदेव क हालत दिन पर दिन सुधरला क जगह अउरी बिगड़ते चलि गइल । अंत में उहो दिन देखे के परल जहिया पतिदेव का प्रान-पंखेरू उड़ि के उनुका से हरमेसा खातिर दूर बहुत दूर चलि गइल । रो-धो के केहू तरे परायणे में काम-किरिया वितवली । उनके बिना आगे क जिनिगी एकदम धुआं-धुआं लउके लागल ।

www.bhojpurisahityangan.com

हिम्मत क के संकोच के टाटी के धीरे-धीरे टारि के घर-बासन, मेहनत-मजूरी, कटिया-बिनिया क के केहू तेरे जिनिगी बितावे लगली । ओह दरम्यान उनके एहसास भइल कि भरल जवानी क बोझ लेके एह दुनिया -जहान में चलल केतना कठिन बा । काम देवे वालन आ संगे काम करे वालन क ललचाइल नजर आ झकझोर देबे वाली बोली-ठिठोली उनुका बरदास से बाहर रहे । बाकिर दूर क सोचि के सुनत-सहत दिन क एक-एक छन बितावे लगली । बाकिर साल-खांड़ बितत-बितत अचानक अइसन ठठपाल पड़ल कि कहीं काम मिले क कवनो ठेकाना ना रह गइल । एकरा चलते खान-खर्च क काम चलावल एकदम मुसकिल हो गइल । लाम-नियरा केवनो घर-परिवार अइसन ना छूटल रहे जहां से उधार भ हथफेर मिले क आस होखे । आपन त आपन भूख से तलपत लइकन के रोवत-बिलखत देखि के मन ही मन छपिटइला क सिवा ओके दूर करे के केवनो चारा भी त ना नजर आवत रहे ।

ढेर दिन कहां भइल । आजे क त बात ह । मन ही मन सकुचात अइन दुपहरिया में रमेसरा केहें गइली । ओकरा दोकान में एक ओर बइठि के गांहकन के छंट जाए क इंतजार करे लगली । जब कुल गांहक छंटि गइलन त आपन अरज-गरज सुनावत हथजोरी करत कहली,

"ए भइया ! आजकल कहीं मेहनत-मजूरी करेके ना मिलला से हाथ बड़ा सकेत बा । घर में एको दाना ना रहला क चलते कई दिन से उपासे बिता रहल बानीं जा । खाली पानी पी-पी के ।"

"तब हम का करीं ?"

"कुछ आटा-चावल उधार दे देत त बहुत किरिपा होइत ।"

"इहवां खैरात बंटत बा का कि जबे देख तबे मुंह बवले चलि आवेलू ।

अबहीं पहिलहीं क बकाया बा । हम त जानीं कि ओही के चुकावे आइल बाडू । अब हम उधार तबले ना देइब जबले पहिले क चुका ना देबू ।"

रमेसरा फूटही थरिया नीयर झनकि के कहलस ।

"हमार भइया न, अइसन मत कर । नीक दिन अइला पर तोहार पाई-पाई चुकता क देइब ।"

"कह दीहलीं न कि ना देइब ।"

"ना देब त हमार दूनों लइका तड़पि-तड़पि के मर जइहें ।"

"उन्हन के आ तोहके जियावे-खियावे क हमहीं ठेका लेले बानी का ?"

"ठेका नाहीं । हम बिपत्त क मारल छिछियात फिरत बानी । आज हमरो जना रहितन त ई दिन देखे के ना न परित ।"

"हं त, एक बात साफ-साफ सुन ल । अब जब तक केवनो चीज बन्हक ना रखबू तब तक हम उधार ना दे सकीलां ।"

"अब हमारा पास बचले का बा कि बंधक रखीं ।"

"तोहरा पास त ऊ चीज बा कि ओकरा बल पर कुछऊ हासिल क सकत बाडू ।"

रमेसरा कुटिल मुसुकान बिखेरत कहलस ।

www.bhojpurisahityangan.com

"ऊं कवन चीज ?"

"गदरल जवानीक्ष।"

"मतलब ?"

"आज क रात हमरा तन-मन क पियास बुझा द । तब उधार का, एही तरे चार-छ किलो रासन दे देइब ।" रमेसरा उनका फाटल लुगरी क बीच से झांकत अंगिया पर नजर गड़ा के कहलस ।

एह घटिया सउदा के नामंजूर क के ऊ ओह घरी चुपचाप उठली आ घरे चलि अइली । उहां लइकन क उहे रोवत-बिलखत चेहरा देखि के उनके अपना पेट क भूख मेटि गइल । ढाढ़स बंधावत, अंचरा से लइकन क संगे-संगे अपनों आंसू पोंछत-पोंछत ऊ मोहठि चुकल रहली । बाकिर करसु त का करसु माई क ममता जो ठहरल । घरी-दू घरी रात जात-जात उनुका धीरज क बांध टूटि गइल । ऊ खुद के ना रोक पवली । उनुका अनुसार रात के जब सूता पर गइल त लइकन के घर में लरुवात छोड़ि के बाहर से दरवाजा क सिंकड़ी चढ़ा के चल पड़ली रमेसरा केहें । नगेसर क दुआर पर ओह समय गवनई खूब जमकल रहे । ओह वखत उनके एह बात क डर सतावत रहे कि उनके जात के केहू देख न ले । राम क नाम लेके जइसहीं आगे बढ़ली ओइसहीं सुरीला सुर में गवइया लोगन क मुंह से छेड़ल गइल गीत क ई बोल उनका कान से आके टकराइल कि,

'गोरी आधी-आधी रतिया के कहां जालू हो ?
चढ़ली उमरिया के गदर जवानी,
मदमातल अंगिया क धारदार पानी,
लेके मोहनी मूरतिया तूं कहां जालू हो ?

गीत क बोल सुनि के अइसन बुझाइल कि जानबूझ के उनहीं के देख के ऊ गीत छेड़ल गइल होई । पांव थथमि के जहां क तहां ठहर गइल । पलट के गावे वाला लोगन क ओर कनखी नजर से निहरली । जब ई विसवास हो गइल कि ऊ गीत उनके देखि के ना छेड़ल गइल बा तब आगे बढ़ली । उनके का पता रहे कि मुअना बिरजू उनके जात देखि के पीछा क रहल बा । रमेसरा क दुआरी पर पहुंच के धीरे-धीरे केवाड़ी पर थपकी देबे लगली। भीतर से रमेसरा क आवाज आइल,

"के ह?"

"." ऊं चुप रहली, कुछ ना बोललीक्ष।

"हम पूछत हईं कि के ह ? का चाही ? कहते रमेसरा केवाड़ी खोललस । सामने उनके खड़ा देखि के अंदर खींच के केवड़ी बंद क दीहलस आ पूछलस,

"आखिर थक-हारि के अवहीं के परल ह न ?"

"मजबूरी जेवन न करावे ।"

"मतलब ?"

"इहे कि बाल-बच्चन क भूख मेटावे क मजबूरी ना रहित त आपन इज्जत क निलामी करे खातिर हम एह रात के इहां अइबे काहें के करतीं ।"

"मजबूरी खाली तोहरे ना हमरो बा । गवना क साले भर बाद मेहरारू मर गइल । रहित त

www.bhojpurisahityangan.com

तन-मन क भूख मेटावे बदे लोकलाज ताख पर रखि के तोहरा अस औरतन क मुंह मारे क जोखिम उठइबे काहें करतीं ।"

"त देखत का बाड़ ? ल आज तोहरा हाथे आपन इज्जत निलाम करे खातिर तइयार बानी ।" ई बात कहला क साथे जइसहीं अपना तन क चीर उतारल चहली ओइसहीं एकाएक धियान भंग हो गइल ।' एसे कि दरवाजा क सिंकड़ी पीटे क आवाज सचहूं क आके उनका कान से बार-बार टकराये लागल । आंख खोलि के देखली तब उनके मालूम पड़ल कि सबेर हो गइल बा । अलसाइल कदमन से जाके दरवाजा खोलली त देखली कि दयादी क पद में लागे वाले देवर राम नरायन क माई आंटा, दाल, चावल आ आलू से भरल डलिया लेके खड़ा बाड़ी । उनके अचरज भरल नजर से देखि के हकलात जुबान से बोल पड़ली-

"अरे अइया ! आप ? आईं बइठीं ।" कहत भीतर ले आके खटिया पर आसन देके अपने भूइयां बइठि गइली ।

"बहू ! तोहरा पर रात में का बितल ह, ओके हमहूं नीके तरह सुन चुकल बानीं । ई बतावे के जरूरत नइखे कि गरीबी आ भूख क मार केतना असहनीय होला ।"

अइया क मुंह से ढाढ़स बंधावे वाला अइसन सहानुभूति भरल बचन सुनि के उनका मन के जइसहीं तसल्ली मिलल ओइसहीं ऊ आपा खोके अहक-अहक के रोवे लगली ।

"चुप रह बहू ! होनी के केहू टार ना सकेला ? एसे कि सब कुछ विधिना क हाथ में जो बा । ई सोच-विचार कइला क बाद ही ई कहावत कहल गइल ह कि सबहीं नचावत राम गोसाईं । कहे क मतलब ई बा कि अब तक जेवन भइल ओके दरकिनार क के नया सिरे से जिनिगी जिए क बारे में गंभीरता से विचार कर ।"

"नया सिरे से ?"

"हं ।"

"रउवां कहे क मकसद का बा, ओके हम समझलीं ना ।"

"बताइब । बाकिर अबहीं ना, बाद में । पहिले हई जेवन रासन-पताई ले आइल बानी ओके लइकन के बनाव-खियाव । एसे कि एह वखत ई सबसे जरूरी जे बा । बात-विचार त आगहूं-पीछे हो सकेला ।" डलिया उनका हाथ में थमावत कहली ।

अइया क हाथ से डलिया लेके ऊ चूल्हा धरवली आ दाल-चावल बइठा के चोखा खातिर अइला में आलू डाल दिहली । ओकरा बाद आंटा गूंथे बइठला क साथे बोललीं,

"अइया ! अब बताईं नया सिरे से जिनिगी जिए क बारे में का कहत रहली हं ।"

"कहल ई चाहत रहली हं कि जवानी से बोझिल जिनिगी क नाव बिना पतवार क पार-घाट लगावल आसान ना ह । कदम-कदम पर तरह-तरह क भंवरजाल आ आन्ही-तूफान क खतरा बनल रहेला । अपना इन्द्रजाल में फंसा के नोचे-खाये वालन के बस मोका मिलेके चाही ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"कहत का बानी । ई कठकरेज समाज एतना निर्दयी बा कि संकट पड़ला पर साथ दिहला क जगह मजबूरी क लाभ उठावे से तनिको बाज ना आवेला । समझे में ना आवत बा कि एकरा से बचल कइसे जाव ।''

"एकरा से बचे क एक ही रास्ता बा कि समय रहते हर औरत नीक-जबून जइसन भी हो सुहाग क पतवार थाम्ह ले ।"

"विधवा क जिनिगी जियला से अच्छा बा कि सुकून क जिनिगी जियला खातिर बियाह क के घर बसा लेबे के चाही । इहे न ?"

"हं । जे सतवंती बनल चाही, ओकर दसा छिछियात आ दूरदुरात ओह कुतियन अस हो जाई जइसन तोहार हो रहल बा ।"

"बात त सही कहत बानी । बाकी हमरा ई नइखे बुझात कि एह दसा में हमके का करे के चाही ।"

"देख बहू ! हम ललो-चपो ना बतियाइब । एसे कि एह मतलबी समाज से हमहूं अलग ना हईं । तोहरा साथे जेवन सहानुभूति जता रहल बानी ओकरा पीछे हमरो बड़हर सुवारथ बा ।"

"ऊं कवन ?"

"सुनले चाहत बाडू त ल सुनि ल ।

"सुनाईं ।"

"हमार सुआरथ एह बात क बा कि अन्न-धन से भरल-पूरल रहला क बादो हमरा घर में कवनो खुसहाली ना बा । एसे कि जेवन -जगह-जायदाद बा ओके केहू हवेखे वाला जे ना बा ।"

"ऊं त देखते बानी ।"

"अइसना में तोहके एतराज न होखे त हम इहे चाहब कि बितल बात भुला के हमरा एकलौता बेटा सामनरायन से बियाह क ल । जेसे कि हमरा घर-आंगन में जेवन अभाव बा ऊ दूर हो सके आ तोहरो जिनिगी के ठेकाना मिल सके ।"

अइया क मुंह से ई बात सुनते उनका दिल-दिमाग में सामनरायण क नखसिख मूरत तैरे लागल । एक पैर से विकलांग आ रूप-रंग से साधारण बाकी पढ़े-लिखे में अव्वल हंसमुख चेहरा, मिलनसार स्वभाव वाला सामनरायन उनका खातिर केवनो अपरिचित ना रहलन । दयादी में एगो उहे त रहलन कि मोका पड़ला पर गाहे-बगाहे कामे आवत रहलन । ओही क नतीजा रहे कि ऊ जेतना उनके मानेली कहीं ओसे अधिक ऊ उनके मानेलन। अबहीं ई सोचते रहली कि अइया क आवाज फिर उनका कान से आके टकराइल ।

"बोल तोहार का विचार बा ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"अइया ! रउवां से अधिक हमरा हित-अहित क बारे में के सोचे वाला बा ! रउवां हमके केवनो गलत सुझाव त देइब ना ।"

"त ई मान लीं कि ई रिस्ता तोहके मंजूर बा ?"

"जी ।"

"ई भइल न बात । हमके तोहरा से एही हामी भरे क उम्मीद रहल ह । त चलत हईं । आगे ओह बियाह के कइसे निपटावल जाय, ओपर विचार कइल जाव ।" एतना कहि के अइया चलि गइली ।

अगले दिन पंडित जी बोलावल गइलन । सुभ मुहूरत देखि के कथा करवला के बाद हंसी-खुसी से बियाह सम्पन्न भइल । ओह दिन से ऊ रामा-बो से बदल के सामाबो कहाये लगली । दिन पलटते जेवन सामनरायन बरिसन से बेरोजगारी क मार सहि-सहि के निरासा क अंधकार में घुटन भरल जिनिगी जिये खातिर मजबूर रहलन, ऊ पास क शहर में विकलांग कोटा क लाभ पा के एगो अ0फिस में बाबू क नौकरी पा गइलन । नतीजा ई भइल कि कल तक दाना-दाना खातिर जेवन ऊ मजबूर रहली, उहे अब रानी बनिके दूसरे क आस पुरावे लगली । गांव-जवार क जे भी समझदार रहे सब इहे कहे कि- 'परमातमा जइसे सामा-बो क दिन फेरलन ओही तरे सबकर फेरसु ।"

www.bhojpurisahityangan.com

कनक किशोर

रांची, झारखण्ड
सचल दूरभाष - 9102246536

कनक किशोर

प्रबंधन सूत्र

संदीप आजु बहुत उदास रहन । लाख कोशिश के बादो घर में मन ना लागत रहे । मन जवना कारण से बेचौन रहे ऊ अपना पत्नी से ना बतावल चाहत रहलन । उनुकर उदासी के कारण कवनो खुशी के बात त रहे ना । सपना के महल ढह गइल रहे संदीप के ओसहीं जइसे बालू के भीत भहरा जाला । आपन मन के पीड़ा आ बेचौनी के ऊ गाँव में रहत माई-बाबूजी से फोन पर बतिया के हल्का कइल चहलन त उनका भीतर से आवाज आइल आजुले कवन सुख देले बाड़ऽ कि ऊ लोगिन के ई आपन असफलता के समाचार सुनावे जा रहल बाड़ऽ । संदीप रूक गइले ई सोच के कि ना ई उचित ना होई । आपन बेरोजगारी के भार छोड़, का देले बानीं ऊ लोगिन के आजुले ! ऊ सोचलन कि खाली हमरे ना बाबू-माई के सपनो के महल धाराशाई हो गइल बा बेआवाज कइले एह से ई दुखद समाचार ऊ लोगिन ना सुन पइहें ।

संदीप एगो खाता-पीता परिवार के डबल एम् ए पास लइका रहलन जे रोजी रोटी खातिर एगो प्राइवेट स्कूल में अध्यापक के नोकरी क के अपना परिवार के पालन पोषण करत रहलन पटना में रहि के । सपनो ओकर कवनो बड़ ना रहे बस एगो प्राध्यापक बने के सपना रहे । प्राध्यापक खातिर आवश्यक योग्यता रहे पीएचडी कइल । एही खातिर अपना शिक्षण कार्य के साथे पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष अंबुज सिंह के निर्देशन में एगो शोधार्थी के रूप में पीएचडी खातिर निबंधन करा लेले रहलन । हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य से उनुकरा जुड़ावे ना रहे, ऊ एगो साहित्य के समर्पित युवा रहन । साहित्यिक लगाव के प्रतिफल रहे पटना साहित्य जगत में उनुकर एगो विशेष पहचान । ई पहचान उनुकरा के रोटी ना दे सकल बाकिर अखिल भारतीय स्तर पर एगो सुपरिचित साहित्यकार बना देले रहे । उनुकर ई शौक उनुकरा रोटी के राहि में कबो-कबो रोड़ा बन जात रहे जे घरो में कलह के कारण बन जात रहे ।

संदीप समय पर आपन शोध पत्र अपना शोध निदेशक सिंह जी आ विश्वविद्यालय में जमा कर देले रहलन । उनुकर शोध पत्र देखि के काफी प्रभावित भइले सिंह जी बाकिर उनुकरा बेर-बेर अनुरोधो पर विभाग के अग्रसारित ना कइले । एही बीच सिंह जी रिटायर हो गइले । सिंह जी संदीप के एक दू बेर डॉक्टर लगाके साहित्यिक बइठकी में संबोधन कर देस आ कहस कि अब संदीप आ डॉक्टर के बीच दूरी नइखे रह गइल । संदीप आपन अनुरोध के नकारत आ अनदेखा करत देखि संशय में पड़ जात रहलन बाकिर ओकर कारण ऊ ना समझ पावत रहलन । आसे जिनिगी ह एही बिसवास पर अडिग रहि अपना सपना के दिलासा देत बढ़त जात रहलन । संदीप के मेरिट के लोहा साहित्यकार जगत मानत रहे । ऊ समझ ना पइले कि हमार शोध पत्र काहे सिंह जी अपना कांखि त दबा के रखले बाड़े ? जब उनुका से जुनियर आ लेंढ़ छात्र सब के

www.bhojpurisahityangan.com

पीएचडी अवार्ड हो गइल आ ओह में से कुछ लोग लेक्चरर बन गइल त उनुकर कान खड़ा भइल । ऊ आपन आका साहित्यकार लोगिन से आपन शोध निदेशक सिंह जी से पैरवी करवले कि सिंह जी, जे एगो नामी साहित्यकारो हवन, आपन साथी लोगिन के बात जरूर सुनिहें । बाकिर एहू पर शोधप्रबंध के स्थिति यथावत बनल रहल त संदीप के निराशा अवसाद में बदले लागल ।

संदीप खातिर पीएचडी अवार्ड में विलंब उनुका के भीतरे से तुड़ देलस । कवनो उपाय ना देखि ऊ अपना साथे के पढ़ल सिनियर सहपाठी महेंद्र से मिलले जे पटने के एगो सरकारी कालेज में लेक्चरर रहलन आ आपन समस्या कहले । संदीप के समस्या सुन के महेंद्र बोलले कि जब तू जानत रहलऽ कि सिंह जी सवर्ण आ तू पिछड़ा वर्ग से त काहे उहाँ के अधीन शोध कार्य शुरू कइलऽ । बिहार में मंडल-कमंडल के मेल मिलाप राजनीति में हो सकेला बाकी शिक्षा के क्षेत्र में ना । विश्वविद्यालय जाति के अखाड़ा ह । छात्र संघ में आ अपना विश्वविद्यालय अध्यापन के क्रम में देखियो के तोहार शोध निदेशक के चुनाव देखि हमरा कहे में कवनों दिक्कत नइखे बुझात कि अपने हाथे अपना गोड़ पर कुल्हाड़ी मरले बाड़ऽ । शिक्षा जगत आ परीक्षा में मेरिट के कवनो स्थान नइखे रह गइल । विरेंद्र यादव के जानत बाड़ नू ऊ आजु शिक्षा मंत्री बाड़ें हमनी के बिहार में । हमरे साथे नूं पढ़त रहलन । वीसी के गरदन पर चाकू रखि आपन ग्रेजुएशन में फेल भइल रिजल्ट के पास में बदलवा लेलन आ बाद में ओही वीसी के अंगरक्षक बनि विश्वविद्यालय के बाजार बना आपन खूब रोटी सेंकलन । उनुकर एगो संत्री से विधायक आ मंत्री के यात्रा गाथा से आजु के नइखे परिचित ! आँखि खोलि के देखे आ समझे के कोशिश ना कइलऽ ओकरे नतीजा तोहार हो रहल दुर्गति के कारण बा संदीप ।

महेंद्र आगे कहले कि अर्थ के प्रधानता बा आजु ओकरा के देखते आँखि से खाली गांही छाप दिखाई पड़ेला, जइसे सावन के अंधा के हरियरी । जात-कुजात, धरम-संप्रदाय सब भुला जाला । धर्मनिरपेक्ष, साम्यवाद, वर्ग आ वर्ण विहीन समाज के पोषक आ शोषक दूनों अर्थ के आंगन में एक साथे ठुमका लगावत दिखाई पड़ेला । उहो अर्थ के अभाव रहल बा तोहरा जिनिगी में ऊ हमरा से बेसी के जानेला ? तोहार बाप ना बड़का सेठ रहलन आ ना उनुकर ऊंच राजनीतिक कद बड़ूवे त तूहीं बतावऽ के सुनी तोहार आजु के समय में । पइसा के खेल आ राजनीतिक दबाव से आजु कुछुवो करावल संभव बा । शिक्षा जगत में आदर्शवाद कागज में सिमट के रहि गइल बा । बाहर का हो रहल बा तू खुद देख रहल बाड़ऽ । सिंह जी काहे ना सुननीं आपन साहित्यकार साथी के बात, कहाँ से ना पैरबी करवलऽ, सोच रे भाई सोच । ओहि पैरवी के साथे पहुंचल मिठाई डिब्बा में एगो गान्ही छाप भरल लिफाफा रहित त देखितऽ ओकर फलाफल ।

एगो तीसरो बाति बता दीं ऊ ह प्रबंधन । प्रबंधन के महत्व सब दिन रहल बा । काल्हुओ रहे आजुवो बा । स्वरूप प्रबंधन के बदलल बा समय के साथे । काल्हु समय आ सिद्धांत के पटरी ध प्रबंधन चलत रहे । आजु बाजारवाद में अर्थ आ समय के पटरी धर प्रबंधन चलत बा । समय कॉमन बा दूनों में बाकिर सिद्धांत के जगह अर्थ ले लेले बा आजु । हमहूं एही शिक्षा जगत में बानीं पटने में । हमरा से का छुपल बा कि का हो रहल बा पीएचडी अवार्ड में । हम जानत बानीं तोहरो से नइखे

www.bhojpurisahityangan.com

छुपल सत्य । तोहरा भीरी सिंह जी के प्रबंधन के सुत्र पहुंचले ना रहे बलुक सिंह जी खुदो इशारा कइले रहीं बाकिर तोहरा आँखिन प सिद्धांत के परदा पड़ल रहे आ कान में गरम करू तेल डाल सुतल रहलऽ आ अब हमरा से कारण जानल चाहत बाड़ऽ । समय बदलल, पीएचडी के सर्कुलर बदलल तोहार समय अब समाप्त हो गइल । नया सर्कुलर के आलोक में समय समाप्ति के चिट्ठी तइयार बा विभाग से एक - दू दिन में तोहरा मिल जाई । ' जाअप्र ' - जाति, अर्थ, प्रबंधन - एगो रोगे ना प्रबंधन सूत्र के रूप में विश्वविद्यालय आ शिक्षा जगत में आपन पहचान बना लेले बा जेकर तू अकेले शिकार नइखऽ ढेर लोग बा । संदीप अब जा घरे बइठऽ अगर पीएचडी करे के मन अबहूं होखे त फेरू से नया निबंधन करा ' जाअप्र ' के नीति के राहि पकड़ बढ़ि चलऽ ।

संदीप घरे लवटले त टेबुल पर एगो बन्द लिफाफा रखल रहे जे विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग से आइल रहे । मन देखि के आशंकित भइल आ खोलले त सर्कुलर बदले आ पीएचडी के उनुकर समय समापन के सूचना रहे। आपन हारल आ मेहरी के मारल त ना केकरो से कहल जाला ई जानत रहन संदीप । अब आपन एह हार के विष्लेषण करस त कब्बो आपन हारल बुझाय त कब्बो ' जाअप्र ' के वर्तमान प्रबंधन सूत्र के मारल ।कारण जवन होखे एगो युवा साहित्यकार के सपना के महल ढह गइल रहे । संदीप उधेड़बुन में रहन कि कहाँ जाईं तबे उहाँ के साहित्यिक गुरु के फोन आ गइल कि ' परख ' के नया अंक आ गइल बा आवऽ सभके भेज दियाव । संदीप ' परख ' के कार्यालय के ओरि आपन झोला लेके बढ़ गइले ई सोचत कि पीएचडी परीक्षा में ना सम्मिलित हो पइनीं ' जाअप्र ' के प्रबंधन सूत्र के अनुपालन के आभाव में, हम फेल नइखीं भइल । मन कुछ हलुकाह लागल बाकिर सिंह जी के चेहरा आ बाति बेवहार आँखि के सामने से ना जात रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

विंध्याचल सिंह

ग्राम - बुद्रऊं, गड़वार, बलिया
शिक्षक आ साहित्यकार ।

विंध्याचल सिंह

'बहारन मरि गइलें'

सबेरे ही सबेर हवा उठल जे बहारन मरि गइलें। ई खबरि कुछहुवें देरी में गाँव के एहि माथे से ओहि माथे ले पाटि गइल। गाँव में अइसन कुली खबरि पाटे में अचिको देरी ना लागे, काहें कि गाँव अइसने नू होलनद्य

जे भी खबरि सुनले, ऊ ऊ बहारन के घर की ओरि चलि जात रहे आ थोरिये देर में उनकर घर-दुआर मनई- मानुस से भरि गइल। अइसना में ऊ हो चलि जाला, जे कबो केहू के दुआरे ना जात होखे, अब ई के ना जाने कि मरे के त एकदिन सभकरा बा।

हवा सिरिफ हवा ना रहे। बहारन सहिये में मरि गइल रहलें।घर में लइका- बाचा रोइ- रोइ के कुहराम मचवले रहलें। उनुका मेहरारू के त दांते प दांत लागे आ पास- पड़ोस के मेहरारू लोगिन समझावे में लागल रहलीं, 'ई सब आइल- गइल आदिमी के बस में कहाँ होला, ई सब त बिधना के हाथ में होला। अब रोइ- रोइ के जनवों दे दिहल जाव त कुछु लवटि के ना नु आई।'

रमन काका बहारन के बड़का से धीरे से पूछलन, ' का भइल रहल ह हो, अभी त परसउवें बाति भउवे, कहत रहुवन कि तनि खोंखी हो गइल बा।'

'आरे कुछु ना भइल रहल ह काका! चारि- पांचि दिन से तनि अनमनाह रहलें आ दवाइयो दियाते रहल ह, अब का बताईं '
एतना कहते ऊ फफकि पड़लें।

बहारन के दुआरे अब तिलियो धरे के जगहा ना रहे। केतने लोग आवत जाउ, चलत जाउ बाकी भीड़ त कम होखे के नावे न लेउ। गाँव छोड़ि बाहरियो जवार से बहुते मनई आइल रहें।

गाँव में अइसना में मनइन के जुटान कवनो अचरज के बाति ना होला बाकि हेतना आदिमी देखिके केहू- केहू के मुंह से निकल जात रहे
'ई कतना आदिमी चलि आइल बा हो? '

www.bhojpurisahityangan.com

जियला घरि बहारन केहू के बाति के अनमख ना मानसुद्यकवनो गुमान- गरूर त तनिको ना रहे। सबसे हंसिये के बोलसुद्यलइको सन से रे कहि के ना बोलसुद्यनीमन सरकारी नोकरियो रहे। कबो- कबो कहाँ दू शहरे जासु, त राति ले आवसुद्य आ अइसनो ना रहे कि उनकर नाम बहारने रहे। ई बहारन नाव त हंसिये- हंसिये में धरा गइल।

ऊ अइसन मनई रहलें, जे फजीरहीं उठि के दुआर झारि- बहारि के घूरा प फेंकि आवसुद्य एकदिन मलिकाइन घर में से कूड़ा- बहारन लेआइ के उनका खांची में धइके कहनीं, ' तनि हइहो फेंकि देइब, हमनीका नहा लेले बानी जा।' ऊहे फेंकत उनकर संघतिया लोग देखि के मजाक कइलें, ' अब तोहार ईहे काम रहि गइल बा, तूं अब बहारने हो गइल।'

आ तबसे उनकर नाव बहारन पड़ि गइल।

बहारन अपना के बहारन कहलइला से ना तनिको चिढ़सु ना बुरा मानसु। ऊ त कहसु कि ए देहि के खटवला से केहू के खुशी आ आराम मिल जाउ त एह में खराबे का बा? आखिर ई देहि त एकदिन माटिये नु होइ जाई। '

ई सब गहीर बाति उनुका घर के मेहरारुवो लोगिन के का बुझाउ? ई त बड़- बड़ जाना के ना बुझाला आ एगो बाति ना कहल जाला, जे एकबेर कवनो सुविधा मिल गइला प ई सवारथी जीव छोड़ल ना चाहे। अब बहारन ऊ मनई त रहलें ना कि दुआरे गोड़ के आवाजे सुनिके घर के तिरिया लोगिन के डरन सिट्टी- पिट्टी गुम हो जावु। केहू कुछु कहे, ऊ अइसने रहलें।

मन में भलहीं खारि होवे बाकी शिउवो काका बहारन के दुअरे आइल रहें। गाँव में रहेके होला त दूशुमनों के घरे अइसना में जाइल जाला। कुछु एइसन ना करके चाहीं, जे लोगन के बीच इज्जत बढ़ावे के जगहा अउरी घटाइ देव।

ऊ पाता ना कवन बाति रहे, कि शिऊ काका बहारन से बहुते दिन से खुन्नस राखसु। हमेश उनुका के नीचा देखावे के बहाना खोजत रहसु। सवांगी आ खेत- बारी में तनि बीसे रहलें लेकिन ना पाता कइसे बहारन के आगा हरमेश फीके पड़ि जासु। ई बाति भीतरे- भीतर उनुके खूबे कचोटे।

छोट प लइकन के ओहि ईस्कूल में नाव लिखवलन जेवना में बहारन के लइका जासन। लइकन सोझा घर में माहोल बनावे बदे पानी के वाटर, अच्छा के गुड आ कुकुर के डागी कहसु। कापी- किताबि कुछऊ के कमी ना कइलन। अब केहू के भागि ना नु बदलल जाई! लइका ओह लायक ना भइलन त जनि होखसु!

बहारन के ढंग सिखावे बदे कई बेर अपना मजूरहा से कहिके एक फरुहा धइके डंड़वो कटवा लेसु

www.bhojpurisahityangan.com

त कबो पाटल गहूं के खेत में अपना डांड़े से नहरि वाला पानी खुलवा देसु आ ताकसु जे देखल जाउ अब का होला? लेकिन जब भी बहारन उनुका से मिलसु त हंसिये के बोलसु। गजबे बा! अब केहू से बरियाइन झगड़ा भी कइल जाउ त कइसे? उलुटे शिऊ काका अइसन लजा जासु, जइसे केहू उनुका पर घइली के पानी फेंकि देहले होखे।

शिऊ काका बहारन के दुअरे बइठल- बइडल सब पुरनकी बाति सोचि गइलें। अब त जेकरा से बरोबरी के लड़ाई करत रहनीं, ऊहे चलि गइल। अब केकरा से बरोबरी कइल जाई? पाता ना का सोचत उनुकर आंखि कुछु गीला होति जा रहली सन। एहि समय बहारन के कहल एगो बाति उनका बड़ा इयाद आवत रहुवे, ' केहू से अनासों खुन्नस कइके केहू आगा ना बढ़े पीछहीं जाला।' ईहे सब सोचत ऊ अपना दुअरे चलि अइलें।

बहारन के मरले शुके- शुके आठ दिन हो गइल रहे। शिऊ काका अपने दुआरे पकड़ी के छांव में बइठल रहलें। तपेसर, तिरलोकी आ भूलोटन के तिकड़ी भी चउकी प जमल रहे। खइनी मलात रहे। ई तिकड़ी अइसन बेमिसाल लालबुझक्कड़ आ खुराफाती रहे, कि का मजाल जे गाँव में कवनो पतई हिलि जाउ, आ इनका लोग के पाता ना रहे। बहारन के संगे शिऊ काका के खुन्नस के हवा देबे में इहाँ सभके बड़ा जोगदान रहे।

तबहियें आठ- दस मोटरसाइकिल से पनरहियन गो मनई आइल आ शिऊ काका से बहारन के घर के पाता पूछलें। शिऊ काका के घर ओहि मोड़ प रहे, जे केहू भी आवे त ओइजे आ उनहीं से बहारन के घर के पाता पूछे के पड़े।

तपेसर खइनी ठोकत कहलें,

'काका देखत बाड़, आजु आठ दिन हो गइल बा बहारन के मरले, ई सब कइसन आदमी ह हो, चिउंटी के बिली जइसे भर्र- भर्र लइनिये नइखे टूटत? '

काका कुछवू ना बोललें।

काका के कुछवू ना बोलत देखि तिरलोकी कहलें,

'आरे ई बिना काम -काज के अन्हेरिया लोग ह। सबका एतना घूमे के कहाँ टएम बा।'

अबकी काका बोललें आ डपटला लेखा बोललें,

'अइसन ना कहल जाला तिरलोकी! बहारन सरगे गइलन आ हमनीका अभी नरके बानी जा। ई केहू अन्हेरिया लोग ना हवे। ई सब लोग बहारन के परेम आ लगाव में आ रहल बा। ई सब बहारन के जस के

www.bhojpurisahityangan.com

परभाव ह।'

तीनों लोग एकटक शिऊ काका के ताकत रहलन, कि आजु सूरज पूरुब के बदले पच्छिम से कइसे उगि गइल बा?

काका ऊपर ताकत फेरु बोललें,

'जिनिगी भर बहारन से अनसहूं राढ़ि रखलीं। ऊ हमार कुछऊ ना लेले रहलें। ऊ जियतो पर चमकते रहलें आ मरलो पर चमकते बाड़न। सही कहाला जे लगे से चलि गइला पर ही कवनो चीज के मोल बुझाला। पहिले मछरी मारल गड़हा जइसे हमरा मन में ना जाने का घोराई गइल रहे, जे कुछु साफ ना लउके लेकिन अब जइसे- जइसे मन थिराइल ह त साफ बुझा गइल बा। गलती पर त हमहीं रहनीं। सांच बाति त ई बा तिरलोकी, कि हमनीं के बीच से हीरा चलि गइल हो आ हमनीका कहत बानी जा कि बहारन मरि गइलें।

www.bhojpurisahityangan.com

मोहन जी सत्यांश

तिखमपुर, बलिया
प्रबंध संचालक-
सत्यांश उपक्रम प्राइवेट लिमिटेड
अध्यक्ष - टू आईज फाउन्डेशन
प्रबंधक-
श्री दयालु बाबा सत्य नयन इंटरमीडिएट कॉलेज

मोहन जी श्रीवास्तव

दिल के बात

बात दिल के कहाँ ओराइल बा
का कहीं,
का कहीं हेराइल बा
जब भी अइले तु आँखि के सोझा
दिल दिमागो त थमथमाइल बा
प्यार के राह हम त चल दिहनी
केतना मुश्किल बा इ बुझाइल बा
कबो अचके में फेरु आ जइते
मान लेंती कि सब कहाइल बा
दिल के दुनिया आबाद हो जाइत
दर्द निकसित जवन समाइल बा
आस विश्वास प्रेम पथि 'मोहन'
नेह के डोर संग बन्हाइल बा

मन के भीतर अन्हरिया बा छाइल जवन
डगमगाई डेराई फेर छँटबे करी
बनिके बरखा के बुनी बहि आँखि से
इ करिया बदरिया त हटबे करी
डटिके रहिहे आवे केतनो आन्हि बयार
नीक बाउर समइया त सटबे करी
दिन ना रहे कबो एक लेखा 'मोहन'
नेह वाली किरीनिया त फुटबे करी

www.bhojpurisahityangan.com

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

वनशक्ति नगर, वार्ड नंबर - 08
आईटीआई रोड, चरित्रवन,
बक्सर, बिहार 802101

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

शंख फूँकीं कृष्ण

शंख फूँकीं कृष्ण, रहे दीं मधुर बँसिया ।
बनी सारथी आ हाँकी रथ फेरु सथिया ।

कतने द्रौपदी लुटइली,
पापी हाथ से हतइली,
काटि फिरीज में रखइली,
फिर अटएची फेंकइली,
अब धरमी के काम नाहीं करे मतिया ।

कांड होत, होला हाला,
तब टिआरपी बढ़िआला,
टीवी पर बहस खिंचाला,
एक दिन सभई भुलाला,
कहिया देखी अब धरम बचावल अँखिया ?

बा कुकरमीन के राज,
ओहने माथे चढ़े ताज,
राजा भइले हवाबाज,
गिरे धरमे पर गाज,
मित आईं पापी खिंचेले धरम सड़िया ।

अफगाने मेटि गइनी,
पाक आ बंग्ला हतइनी,
काशमीर से खेदइनी
केरल, बंग मिटे भइनी,
सुदर्शन उठाईं आ मेटाईं पपिया ।

सीता सावित्री के देश,
रखनी रखल कनुनी-ऐश,
कुलटा संगे जनादेश,
वध गो जायज ए शिवेश,
कलमुँहन वधे के चकर चलाई रसिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

बजल धरम क डंका

मंदिर भइल आजाद अवध में,
बजल धरम क डंका ।
राम भजन गुँजल जगती में,
अमरीका भा लंका ।

लाल चौक पर झंडा गाड़ल,
दुलम रहे हुजूर ।
देशभक्त शासक होखल त,
चाँद रहल ना दूर ।

पलटि गइल अधरम के पासा,
रावन कंस निराशा ।
राम-धरम पर अकबक बोलस,
उगिलस जहर हताशा ।

देखीं देश हजार बरिस तक,
कइसे रहल गुलाम ।
राम आगमन होत अजोध्या,
दिखले फनिक तमाम ।

रामनाम के लूट मचल बा,
रउवो लीं ना लूट ।
राजनेति क नरक से निकलीं,
प्रान जाउ ना छूट ।

www.bhojpurisahityangan.com

चले देखिले न राम अवधे अइले

चले देखिले न राम अवधे अइले,
चले देखिले ।

पाँच सइ बरिसे के गुलमिया बिलेइली,
अवध राजधानी फेर झूमि अगरइली,
फेरु सरजू के तीर मगने भइले,
चले देखिले ।

ना मोरा राम के, से कवना काम के,
दरसन के उमड़ल सब, राम अभिराम के,
साँच, सचहूँ सनातन सपने भइले,
चले देखिल ।

बीस गो वोकिल राखि, कोट में जे लड़ल,
जनमभू मेटावे में, हाथ धोइ पड़ल,
छलियन के कल-छल बेकारे भइले,
चले देखिल ।

कटत मिटत खंडे-भारत बा बाँचल,
राम के लहरे देश, झूमि-झूमि नाचल,
हिंद हहरत हियरा अँजोरे भइले,
चले देखिले ।
दरसन के तरसत पचीसो पीढ़ी गलल,
लाखो बलिदान भइले, धरम गइल छलल,
अवधे अजादी रामराजे अइले,
चले देखिल ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

राजपूत नेवरी, भृगुआश्रम
बलिया (उत्तर प्रदेश)
सचल दूरभाष - 9935108535

डॉ. जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

मेहनतकस किसान

जेठ के लपलपात दुपहरी में
गाँव के अमराई में
कवनो घन तरु के छाईं में
बाँस के
टुटही खाट पर
गुदरी बिछा के
देहन अलसा के
भुखाइल पेट
उघारे-निघारे
अगर केहू सूतल होई
ते ऊ कवनो गरीब ना
बलुक नेवर के खान होई,
गाँव के गोंयड़े के
कवनो मेहनतकस किसान होई ।

बढ़ल जात होई
ते ऊ कवनो
पागल-सनकी ना
बलुक करमजोगियन में
महान होई,
गाँव के गोंयड़े के
कवनो मेहनतकस किसान होई ।

पूष-माघ के हाड़ कँपाऊ
सीत में
हरियरी से लहलहात

www.bhojpurisahityangan.com

बढ़ल जात होई
ते ऊ कवनो
पागल-सनकी ना
बलुक करमजोगियन में
महान होई,
गाँव के गोंयड़े के
कवनो मेहनतकस किसान होई ।

पूष-माघ के हाड़ कँपाऊ
सीत में
हरियरी से लहलहात
खेतन के पिरीत में
सीत के निहारत
सीतलहरी के दुतकारत
खेते के डंडार पर
अलाव जरवले
आँखिन में
असरा के फूल उगवले
अगर केहू बइठल होई
ते ऊ कवनो हठी ना
बलुक आस में
जीये वालन के
सान होई,
गाँव के गोंयड़े के
कवनो मेहनतकस किसान होई ।

www.bhojpurisahityangan.com

श्वेता पाण्डेय 'खुशबू'

C/O वीरेंद्र नाथ पाण्डेय
समीप- बिसरायन बाबा
पौहारीपुर, मुलायमनगर, शिवपुरी कालोनी
गड़वार रोड, बलिया, उत्तर प्रदेश
Pin code – 277001
सचल दूरभाष - 6393621138

श्वेता पाण्डेय 'खुशबू'

बाबू जी के पगरी

बाबू जी । ई राउर पगरी
कांहें एतना भारी हो गइल ?
दबा-कुचा के एकरा नीचे
केतने बेटी मारल गइल ।

नाव बढ़इहें बिटिया हमार
मान हमार बढ़इहें ई ।
पढ़ी-लिख के अफसर जे बनिहें,
घर-बार आ देश चलइहें ई ।

शान बढ़इहें हमार ई
पगरी के भी मान बढ़ी ।
आन के तोहरा सौं ले बापू
बिटिया तोहार बड़ भइल ।
दबा-कुचा के एकरा नीचे
केतने बेटी मारल गइल ।

खूब खुशी से डोली में तू
दुलारी आपन बिदा कईल ।
संघे दे दिहलऽ पगरी
ओहसे ना बिसभोर कईल ।

घूमतारे जे छुटा सांड़ बन
उनकर पुख्ता जाँच बा ।
लेकिन चउकठ के भीतर बाबुल
का कहीं केतना आँच बा ?

बात, लात आ घात बाबूजी
ई सब कुछ ऊ सह जाली ।
जो कुछू करेके ऊ चाहें
पगरी के याद फिर आ जाला ।

ढ़ोवते रह गइली पगरी तोहार

www.bhojpurisahityangan.com

इहवां रहली भा उहां गइली ।
दबा-कुचा के एकरा नीचे
केतने बेटी मारल गइली ।

तोहरा घर के इज्जत के
ऊ बाजारू बतलावे लें ।
आस, पियास, विश्वास, सांस पर
आपन धौंस जमावेलें ।

चउकठ की बहरा बेटी तोहार
पढ़ल-लिखल, समझदार अव्वल ।
जे गोड़ धरे डेहरी के भीतर
गंवार, निक्कमा, जाहिल भइल ।
दबा-कुचा के एकरा नीचे
केतने बेटी मारल गइल ।

काहें ना कहल बिटिया हमार
पगरी तोहसे तू पहिले बाड़ू ।
ई त ह ताकत तोहार
कमजोरी काहें मानताड़ू ?

जे हाथ उठाई कवनो दुशासन
ओहदिन चीर तोहार बन जाई ईऽ ।
जो आगे आई कवनो घाती
ओकरा के फन्दा फिर पहिनाइ ईऽ ।

बस एतने कही द बाबूजी
ई खाली पगरी ह बोझ नाहीं ।
मान, शान, सम्मान सही बा
लेकिन बेटियो मिलेले रोज नाहीं ।

बल देद बेटी के बनऽ सहारा
नवका बिहान ऊ ले आई ।
तोहार मान त बढ़बे करी
ऊ आपन सम्मान बचा पाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

INVEST WITH INTENT

Back your **FINANCIAL VISION**
with a **NEED-SPECIFIC**

SIP SYSTEMATIC INVESTMENT PLAN IN EQUITY MUTUAL FUNDS

*Powered by NJ

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

SUNIL KUMAR YADAV
MOBILE: 9839159190
Email: SKYAASNOLIMIT@GMAIL.COM

SUNIL KUMAR YADAV - AMFI REGISTERED MUTUAL FUND DISTRIBUTOR

www.bhojpurisahityangan.com

आरती पाण्डेय

शोधार्थी, हिन्दी
जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय
बलिया
सचल दूरभाष - 8545903320

आरती पाण्डेय

एह समय में (कविता)

अइसे देखल जाव त
एह दुनिया में का, का नईखे ।
नीक-बाउर सब बा ।
रेणु जी के बानी में कहल जाव त
ईहवां फूल भी बा, शूल भी बा ।
गुलाब बा, त कीचड़ भी बा ।
सुंदरता बा, त कुरूपता भी बा ।
दामन त कवनो भी चीज से
ना बचा सकेला आदमी ।
लेकिन कबो कबो
आंख बचावे के पड़े ला ।
अनदेखा आ कि अनसुना
करे के पड़े ला ।
काहे से कि
सब चीज देखे लागल जाव त
जिनगी जियल दूभर हो जाई ।
आज के इ दुनिया में
अपनापन आ लगाव त
रह नइखे गइल ।
रिश्ता त अइसे तार-तार हो रहल बा ।
मान जे कच्चा सुता होखे ।
छन भर में टूट रहल बा ।
नेह अउर भरोसा के मजबूत डोरी
कमजोर पड़ चुकल बा
परिवार के बांध सके में ।

www.bhojpurisahityangan.com

इंसानियत कवनो जुमला हो गईल बा ।
जर्तुआही आ बदला के भावना में,
एक-दूसरा से आगे निकले के होड़ में
के, कब, केकरा के, कइसे
नुकसान पहुंचा दिही !
कुछु कहल ना जा सकेला ।
मार-पीट, खून-खराबा
चोरी, दगाबाजी, झूठ, फरेब
का, का देखल जाव !
बहुत कुछ देख के भी
ना देखले में ही भलाई बा ।
नाही त जिनगी से सुकून
आ इंसानियत से भरोसा
दुनो उठ जाई ।
एह समय में
देख के अनदेखा
आ सुन के अनसुना कईल ।
जरूरी लागे लागल बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

फतेहचन्द 'बेचैन'

आनंदनगर, बलिया
सचल दूरभाष- 9455735415

फतेहचन्द 'बेचैन'

धरती के हरा बनाई

पौधा रोपण खूब करीं धरती के हरा बनाईं,
एक इंच भी जगह मिले वहाँ भी पौध लगाईं।
अपनी साथे साथ भी दूसरा के प्रेरणा देईं,
पौध रोपण के मिशन बना के एके सफल बनाईं।
महुआ, पाकड़, पीपर, बरगद, कटि के दूर भइल,
ताल, तलैया, पोखर, भीटा पटि के दूर भइल।
भादों में अब धूरि उड़त बा चइत में पानी बरसे,
दइब के लीला देखे तू पानी भी दूर भइल।
धरती के दुश्मन ह प्लास्टिक ऊसर खेत बनावेला,
गल ना पावेला इ कबो तब आपन रूप देखावेला।
खाके जानवर एकरा के दुनिया से विदा ऊ हो जाला,
इस्तेमाल अबो से रोके कहके कहर ई ढावेला।
धरती के दुश्मन ह प्लास्टिक ऊसर खेत बनावेला,
गल ना पावेला इ कबो तब आपन रूप देखावेला।
खाके जानवर एकरा के दुनिया से विदा ऊ हो जाला,
इस्तेमाल अबो से रोके कहके कहर ई ढावेला।
पेट्रोल, डीजल क धुआँ धरती से अंबर तक छवले बा,
पर्यावरण क दुश्मन बनि दुनिया के ई भरमवले बा।
मारत बानी पैर कुल्हाड़ी सोचे का मजबूरी बा,
आक्सीजन के होत कमी बा मानवता के सतवले बा।

www.bhojpurisahityangan.com

विजय मिश्र

सुहवल , कुसौरा , बलिया उत्तर प्रदेश
हा० मु० टण्डवा, बंकवा, बलिया (उ०प्र०)
पूर्व प्रधानाध्यापक, रामझलक चौबे
पूर्व माध्यमिक विद्यालय टण्डवा,
बंकवा, बलिया (उ०प्र०)

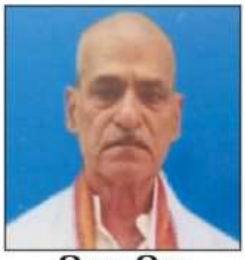

विजय मिश्र

लइका सयान हो गइल

लइका हने ला जबाब अब सयान हो गइल।
बहू अइली घरे अलगा चुहान हो गइल ।।

पहिला रिस्ता टूटल जाता नवका रोज धराता
ननिअउरा त यादि न आवे बढ़ल सढुआ नाता
माई बाबू काटे ससुररिया परान हो गइल।
बहू अइली घरे अलगा चुहान हो गइल ।।

टूटहा भंगहा गउँवा घरवा बाबूजी के बाटे
बबुआ जी आवे ले त लागे ला कुक्कुर काटे
सहरे मेहरी के नावे मकान हो गइल।
बहू अइली घरे अलगा चुहान हो गइल ।।

मोका पाके लागल दुसमन सटि सटि के बतियावे
मिलल सुतार त जइसन तइसन उलिटा पाठ पढ़ावे
रहे बिगरे के तऽ उलिटा धियान हो गइल।
बहू अइली घरे अलगा चुहान हो गइल।।

कान भराए लागल उनुका मन में पाप समाइल
जिनिगी भर के कइल धइल छन में कहाँ विलाइल
कुछऊ सिखलवला पर लागे अपमान हो गइल।
बहू अइली घरे अलगा चुहान हो गइल ।।

जब ले बा लरिका कुँवार तबे ले आपन बूझीं
ओकरा के पाले पोसे में दुख संग हरदम जूझीं
पढ़ल लिखल बेटा देखते अनजान हो गइल।
बहू अइली घरे अलगा चुहान हो गइल।।

www.bhojpurisahityangan.com

चलत काम भगवान भरोसे

घूमि घूमि के देखि ले भइया
परल होस बाटे मद होसे ।
चलत काम भगवान भरोसे ।।

जाने कइसन ई आजादी
खउरा खपटन के बा चाँदी
के रोकी कइसे बरबादी

नवका देखऽ चलन चलल बा
दागी संगवा ले ले पोसे ।
चलत काम भगवान भरोसे ।।

सभे लुहेंड़ा आगे भइलन
पा जोगाड़ जगहा पर गइलन
बहती गंगा छउकी नहइलन

सामिल बाजा बाजि रहल बा
मारि खात खाली निरदोसे ।
चलत काम भगवान भरोसे ।।

गलते पोसल ढोवल जाता
झूठ मूठ के रोवल जाता
जवनो बाँचल खोवल जाता

हहरा ढूकल बा सगरे अब
रिस्वत ले ले खूब भकोसे ।
चलत काम भगवान भरोसे ।।

पाठ पढ़ाई में ना दम बा
कवन विभाग कवना से कम बा
सबमें बइठल ढींठ अहम बा

जोगवल सपना टूटि रहल तऽ
दसा देखि के मन मसोसे ।
चलत काम भगवान भरोसे ।।

www.bhojpurisahityangan.com

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

मैरिटार, बलिया
सचल दूरभाष- 9415682126

रसराज

गीत

(1)

उभ चुभ मन कइसे, लिही साँस मितवा ।।
दुनिया दारी गरवाँ, क फाँस मितवा ।।

नेह-नाता झूठ लागे, झूठे कुल-खूँट लागे ।
करिं केकरा पर अब, बिसवास मितवा ।।

सुखवा के साथी सभे, दुखवा में मुँह मोड़े
छनहीं छने करे उपहास मितवा ।।

अइसन बहुरूपिया कि, रूप बदले बार बार
होखहूँ न देला, आभास मितवा ।।

ठग हे ठगेला सबके, छोड़े नाहीं केहुए के
गली - गली एकरे, निवास मितवा ।।

कुछऊ ना सूझे मोरा, घर-अंगना दुअरा
लगे 'रसराज' सगरे, उदास मितवा ।।

www.bhojpurisahityangan.com

(2)

खेती बारी बेचि- खोंचि के, जाके शहरे बसि गइलन ।
जबसे गइलन भईया हमरो, लवटि के घरवा ना अइलन ।।

ना तिकवेलें कबो भुलइलो, गउवाँ आपन बा की ना ।
चाचा-चाची भाई-भतीजा, माई -बाबू बा की ना ।
रिस्ता नाता सब छूटि गइले, करनी धरनी खा गइलन ।।

पढ़ल लिखल के मतलब का ह, गउवें छोड़ि के चलि जाईं
संगी-साथी नियरा-ओहटा, देखते ओके जलि जाईं
ढेर कमइला के कुंठा में, सब कुछ आपन गवाँ गइलन ।।

रोवे माई पोता -पोती, कइसे हमके चिन्हिहें
दादी कहि-कहि गोदिया आके, कवना घड़ी बइठिहें
कहे 'रसराज' जमाना बदलल, रीति रिवाज भुला गइलन ।।

www.bhojpurisahityangan.com

विनोद कुमार 'विमल'

लेखक

भारतीय सेना में कार्यरत

विनोद कुमार 'विमल'

भाषा भोजपुरिया

कुहुके ली़
भाषा भोजपुरिया हो ।
गतरिया में लाज नाही तनिको़
बेची खईलै़
भाषा के गठरिया हो,
गतरिया में लाज नाही तनिको ।।1़

गाई, बजाई खूब़
कमईब तू पइसा,
चलब उतान कहब ,
के बा हमरा जईसा,
अईठे लें
जरल जस रसरिया हो़
गतरिया में लाज नाही तनिको़2

कुहुके ली़
भाषा भोजपुरिया हो ।
गतरिया में लाज नाही तनिको़

ताल सुर धुन का है
कबों ना ही जनलै़
भाषा भोजपुरी का है
भाव ना ही मनलै
भुलि गईलै़
'विमल' शब्द अच्छरिया हो,
गतरिया में लाज नाही तनिको़3

www.bhojpurisahityangan.com

कुहुके ली़
भाषा भोजपुरिया हो।
गतरिया में लाज नाही तनिको 4

निक जबून का है,
तनिका विचारै़
भाखा मर्यादा के तू,
तानिका सम्हारै
झांक तनी़
'विनोद' भीतरिया हो,
गतरिया में लाज नाही तनिको 5

कुहुके ली़
भाषा भोजपुरिया हो ।
गतरिया में लाज नाही तनिको़

www.bhojpurisahityangan.com

हहरत हियरा में, केहू हच से समाई जाला

हहरत हियरा में,
केहू हच से समाई जाला
जिनिगी के उकठल बगिया,
हरियराई जाला ।

पुछि लेबि,
प्रेम में पियासल,
कवनों प्रेम पथिक से ।
सचहूं ! तब,
मन गदगद हो जाला,
हीयरा आघाई जाला ।

पपिहा के प्यास त,
स्वाति के बूंदे से नू बुझी ।
जवना के पियते,
पपिहा के करेजा जुड़ाई जाला ।

हहरत हियरा में,
केहू हच से समाई जाला
जिनिगी के उकठल बगिया,
हरियराई जाला ।

पूछि लेबि,
कबो कुहुकत कलियन से,
जहां भंवरा मड़राई जाला ।
सचहूं ! तब,
कलियन रंगत खिल जाला,
आ ऊ कली गदराई जाला ।

हहरत हियरा में,
केहू हच से समाई जाला
जिनिगी के उकठल बगिया,
हरियराई जाला ।

www.bhojpurisahityangan.com

रवाली आ बाहरवाली में भेद 1

घरवाली मधुमक्खी होखसू
मारसु हरदम टूंड ।
फिर भी ऊ मधुएँ बरसावसू
उनसे मत, भागि दूर ।

लड़िहे-झगड़िये तबो दुलरिहें
ममिला समझि भरपूर ।
दुर्दिन में कामें ऊ अइहें
तब कहिहै, सुनि ! हजूर ।

मत बिसराईब चित्त से उनके
कब्बो, करबि ना दिल से दूर ।
हँसि ! पघिलाई ! मन बहलाई !
उनके ! समुझि ई बात जरूर ।

बाहरबाली तितली भर होली
केतना ऊ मगरूर ।
रस चुसल भर काम हे उनकर
फेरू उड़ जाली ऊ फुर्र ।

चार दिन के चननि, भर होली
ऊ कहे ली खुद के हूर ।
काम निकलते लातों मरिहै
करिहै हटे तू दूर ।

भेद समझ ली आपन-दूसर के
श्विमलश बनी ना हजूर ।
हास-विनोद के बात अलग हे
रहि एह तितलिन से मुड़ ।।

www.bhojpurisahityangan.com

अनिल ओझा 'नीरद'

28/4 भैरवदत्ता लेन, नंदीबगान,
सलकिया, हावड़ा.
सचल दूरभाष - 9830057686

अनिल ओझा 'नीरद'

गीत ।1।

चिन्ता में, दुख में जो कबहीं, हंसी फूटि जाइत ।
छन भरि खातिर सही, तबो ई लड़ी टूटि जाइत ।।
बरखा वाला बादरि, रेगिस्तान में जो छाइत ।
मृग छौना कुलांच भरिते, आखेट ना हो पाइत ।।
भगजोगनी आपन अन्हार, अपने बनाइ लेइत ।
कबो भुलाइयो के लोग मुंह से, सांच बोलि देइत ।।
पानी परित, मोर मन माटी नियर, महकि जाइत ।
जगह-जगह के धूरि, भींजि के, सोन्ह गमकि जाइत ।।
सिकड़ी के खड़-खड़ सुनि के, दरवाजा अगराइत।
काश ! कि आपन बनि के केहू, हमरा घर आइत ।।
इन्द्रधनुष के सातो रंग, अंखियनि में करित किलोल ।
मन भंवरा अस गाइत बगिया, कली-कली पर डोल ।।
काश ! कि दुख में केहू आपन, अइसे आ जाइत ।
बिना खेल में जितले, मन ई, पदक पाइ जाइत ।।
काश ! कि जिनिगी में दुख के, दुपहरिया ना आइत ।
काश ! कि दुखवो में मन, चुनरी अइसन लहराइत ।।
घर,दरवाजा, खिरिकी, चिरई जइसन बतिअइते ।
दुनिया के हर रिश्ता, फेंड़-गिलहरी बनि जइते ।।
नदिया के कल-कल धारा, संगीत सुना जाइत ।
घाही मन, पहाड़ से गीरत, झरना बनि जाइत ।।
चिन्ता में, दुख में जो कबहीं, हंसी फूटि जाइत ।
छन भरि खातिर सही, तबो ई लड़ी टूटि जाइत ।।

www.bhojpurisahityangan.com

गीत ।2।

कहां कहां ना रहेलू तूं ?

हे जन जन के पीरा बोल, कहां कहां ना रहेलू तूं ?

दर्द तोहार जे सहचर हउवे ।
रिश्ता ओह से लमहर हउवे ।
कुंठा, घुटन दबा के भीतर
नयनन से बस बहेलू तूं ।।
कहां कहां ना रहेलू तूं ?

इन्तजार के बोझिल छन में ।
अउर मिलन के मातल मन में ।
आतुर अतना अधर हो जाला,
पीरा भरि बस कहेलू तूं ।
कहां कहां ना रहेलू तूं ?

मुंह ना खुले, नयन खुलि जाला ।
लोर, नदी निर्झर बनि जाला ।
दुइ-दुइ पाटन के बंधन में,
कसमसाइ कुल्हि सहेलू तूं ।
कहां कहां ना रहेलू तूं ?

कबो-कबो त बोझ उतार ।
जीनिगी बा अनमोल संवार ।
पीरा के मुस्कान बना के,
काहें कबो ना हंसेलू तूं ।
कहां कहां ना रहेलू तूं ?

हे जन जन के पीरा बोल, कहां कहां ना रहेलू तूं ?

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. रामरक्षा मिश्र 'विमल'

निकट - पिपरा प्राइमरी गवर्नमेंट स्कूल, पिपरा
देवनगर, पोल नं. 28, पिपरा रोड,
पो. - मनोहरपुर कछुआरा
पटना - 800030
सचल दूरभाष - 9831649817

डॉ. रामरक्षा मिश्र 'विमल'

गीत

(1)

ओठे पपरी
लाख दिलासा
खाइबि तब जानबि ।

एको कवर गइल सुबहित ना
मन पँवरे सगरी
राह कठिन ओठन पर मुसकी
माथ भरल गगरी ।

कइसन कजरी
कइसन फगुआ
गाइबि तब जानबि ।

पानी नियन बहल पइसा
बबुआ मन से पढ़ले
माई बाबू संग मन में
दुनिया नवकी गढ़ले ।

गरदन फँसरी
तेज दउड़ बा
जाइबि तब जानबि ।

समता का मकुनी में सुंदर
बइमानी पूरन
हरिआए मन छिरकइला पर
जिनिगी के चूरन ।

बरिसे बदरी
चानी सोना
पाइबि तब जानबि।

www.bhojpurisahityangan.com

(2)

ना होखे बरदाश
करे छटपट मन
गीत बनल ।

बिजली के तेजी मचले
ना डेग रहे धरती
हरियाए लागे चिंतन के
मरुआइल परती

सम्मत जरते
ताल ठोकाइल
हिरदे प्रीत भरल ।

समहुत के सपना टूटल
अँधियारा मन में अब
प्रभुता के धरती सिकुरल
जिनिगी खुद से गायब

पँवरे अब बिसवास
सनेहिया तक
पानी पइसल ।

www.bhojpurisahityangan.com

रामनाथ बेखबर

संपर्क - 8/1, एस. एम. बाई लेन, बाँसबगान, वापदानी
पोस्ट - वैद्यबाटी, जिला - हुगली
पिन - 712222 (पश्चिम बंगाल)
फोन नंबर - 7980630154

रामनाथ यादव 'बेखबर'

गजल - 1

कहाँ कहियो हँसके हँसावे ले जिनगी
बहुत नाच हमके नचावे ले जिनगी

मनावे के दुनिया मनावे जनम दिन
उमिर सबके लेकिन घटावे ले जिनगी

कहाँ कुछउ दुनिया में हमनी के बाटे
मगर केतना सबके रिझावे ले जिनगी

इहे रंग जिनगी के सुन्दर बहुत बा
अन्हरियो में रस्ता दिखावे ले जिनगी

कबो ऊँख जइसन निचोड़े ले सबके
कबो गोड़ धर के मनावे ले जिनगी

भईया इहे हमरा देखे के बाटे
कहाँ से कहाँ ले निभावे ले जिनगी

www.bhojpurisahityangan.com

गजल - 2

घर में जब तकरार भइल
आँगन में दीवार भइल

गाँव - गाँव में देखीं अब
बस एकल परिवार भइल

खेवनहार क किरिपा से
नाव भँवर से पार भइल

कब बकरिन के साहस से
बाघन के बा हार भइल

इ नेतवन के करनी से
देश क बंटाधार भइल

महँगाई के मार पड़ल
सिर पे बहुत उधार भइल

हमरा अइसन लागत बा
मायावी बाजार भइल

www.bhojpurisahityangan.com

गजल - 3

आपके सच कहल हो गइल
जिनगी अब गरल हो गइल

मन कहाँ अब सुनेला तनिक
जाने कब बेकहल हो गइल

दर्द जब - तब मिलल प्यार में
दर्द लिखली गजल हो गइल

शेर पढ़नी जे हम हिज्र के
हमरी अँखिया सजल हो गइल

पांव जइसे पड़ल आपके
हमरी झुग्गी महल हो गइल

www.bhojpurisahityangan.com

गजल - 4

जेतना हो सके घटावत जा
बात से बात मत बढ़ावत जा

काम मुश्किल बा फिर भी हो जाई
पहिले टेबुल पे कुछ चढ़ावत जा

हमके सब कुछ समझ में आवता
पट्टी हमरा के मत पढ़ावत जा

जान से बढ़के दोस्ती होला
दोस्ती पर भी कुछ लुटावत जा

दूर नफरत ई कहियो हो जाई
रंग मिल्लत क तू लगावत जा

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. कादम्बिनी सिंह

शिक्षिका आ लेखिका

सचल दूरभाष- 9415681901

डॉ. कादम्बिनी सिंह

भोजपुरी गजल

पहिले अस अगराई कइसे
मन के मइल धोवाई कइसे

जे बैनन का बीच गंथल ऊ
बैन के बान चलाई कइसे

जारि के करिखा काहे कइले
माटी अब पियराई कइसे

लागत बा बहि जाई गंउआं
बरखा आजु पटाई कइसे

लइकाईं के गोटी खेलल
चउथापन बिसराई कइसे

जेकरा खातिर जवन धइल बा
ओसे बेसी पाई कइसे

www.bhojpurisahityangan.com

शशि प्रेमदेव

प्रधानाचार्य

कुँवर सिंह इण्टरमीडिएट कालेज
बलिया (उ० प्र०)
हिन्दी,भोजपुरी में गद्य एवं पद्य लेखन
अब तक तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुकल बा
दूरभाष- 94158 30025

शशि प्रेमदेव

शशि प्रेमदेव के दू गो 'गजल'

(1)

जोर केतनो जमाना लगाई, पिया
नेहि के ई दिया ना बुताई, पिया

प्रीति के रीति जहिया ले कायम रही
तीत मरिचो जनाई मिठाई, पिया

रोज बेरा पश असहीं भेंटाइल करे
माश्र दी ना तश हमके खराई, पिया

ले गइल् दूर हमरा से तोहके जवन
रेलगाड़ी लगल ऊ कसाई, पिया

बाट जोहत-निहारत बदन गलि गइल
हो गइल सींक जइसन कलाई, पिया

बैर, नफरत, सवारथ के एह् दौर में
प्यार सगरो मरज के दवाई, पिया

www.bhojpurisahityangan.com

(2)

बात कबहूँ तोहार ना मानी
दिल् हश जिद्दी हमार, ना मानी

साँस जबले रही, लड़ी असहीं
हार गइलो पश हार ना मानी

झूठ सबके कबूल हो जायी
साँच कहबे जवार ना मानी

साँझि ले कइसहूँ रही दुबकल
बाद ओकरा अन्हार ना मानी

लाख पतझर करे विरोध मगर
फेरु लवटी बहार, ना मानी

धूर बनिके रही जे उनुका के
बे उड़वले बयार ना मानी

रहि गइल जे शहर में जनमे से
गाँव के घर-दुआर ना मानी

www.bhojpurisahityangan.com

श्वेता राय

परास्नातक (जंतुविज्ञान), बी एड
सम्प्रति - बेसिक शिक्षा विभाग में विज्ञान अध्यापिका
सम्पर्क - आजाद नगर, ट्यूबेल कॉलोनी
देवरिया - 274001

श्वेता राय

1

का बतलाईं यार बुढ़ारी ।
कई देला बेकार बुढ़ारी ।

आँख कान सब गइल किनारे,
घुटना से लाचार बुढ़ारी ।

दांत हेराइल स्वाद बिलाइल,
लागे जइसे भार बुढ़ारी ।

बरवा झर के उज्जर हो गइल,
का करिहें श्रृंगार बुढ़ारी ।

इंस्टा ट्विटर जुग में जाना,
बासी बा अखबार बुढ़ारी ।

नाती नतिनी यदि हो संघे,
तब जाना गुलजार बुढ़ारी ।

गऊंवा तब्बो ठीक ठाक बा,
शहर में जिउ के मार बुढ़ारी ।

राम राम कहि रोज पूछाला,
होई कइसे पार बुढ़ारी ।

www.bhojpurisahityangan.com

2

भोजपुरिया के सुना बखान ।
बोली जइसे मिठका पान ।

चौता कजरी निर्गुन पचरा,
जोगवा सोहर एकर गान ।

दादी के कुल किस्सा एम्मन,
बाबा के भी इहे जबान ।

टोला टपरी बारी कुँआ,
सब केहू तूरे एकर तान ।

लोरी में माई जब गावे,
सुत के लइका करें बिहान ।

गांव नगर से दूर देश में,
इहे करावे ला पहिचान ।

कबो न एके कतही छोड़िहा,
छोड़ बा पईबा ना मान ।

सब केहू बोलें तुहूँ बोलिहा,
भोजपुरिया के इहे गुमान ।

www.bhojpurisahityangan.com

निर्मल चौधरी

रिटायर जुट मजदूर
सम्पादक - मजदूर, मासिक पत्रिका
परमेश्वरी निवास, 7 तियरपाडा लेन
तेलनीपाडा भद्रेश्वर
हुगली, 712125
सचल दूरभाष - 9062960251

निर्मल चौधरी

भोजपुरी गजल

महजान के सूद के, सामान हो गईल
भीरवा की बिटिया जवान हो गईल ।

करजा से सोहर, करजे से सराध होखे,
ई बंधुआ रहे के बिधान हो गईल ।

घड़ी - घड़ी आवत रहे, हाल - चाल पूछे,
भोट जबसे देनी उ त चान हो गईल ।

जवन चाहीं तवन ल, रूपया अगर होखे,
देस अब बनिया के दोकान हो गईल ।

कउवा सियार के बहार आ गईल,
मंच जबसे देस के मचान हो गईल ।

ई ह आजादी, त गुलामी रहे नीक,
सहीदवन के खून त जियान हो गईल ।

www.bhojpurisahityangan.com

राजेश भोजपुरिया

लेखक

जमशेदपुर, झारखंड
राष्ट्रीय संयोजक,
भोजपुरी जन जागरण अभियान

राजेश भोजपुरिया

लघुकथा -

री उक्ह ूलम' क्पे रअ

रमेशर के अपना इलाका में बड़ी शोर रहे । आ रहो काहे ना उ अपने कहत फिरत रहन कि हमरे नाम रमेशर ह । हमराके के नइखे चिन्हत ! सब कोई चिन्हत बा, हमार काम कबो ना रुके ! जिला-जवार में हमार नाम बा । जहाँ चल जाइना ओहिजे लोग चाय-पानी खातिर बइठावे लागेला ! मोहल्ला में कुछ लोगन से परिचय रहे उनकर बाकिर अइसन ना रहे कि पूरा इलाका उनका के चिन्हत होखे ।

कवनो बात के लेके रमेशर मीन-मेख निकाले में आगे रहस । बतकुच्चन में उनकर जोर ना रहे । केहू के लजवावे वाला काम भी दस आदमी के बीच में कर देत रहन । इनका एह करनी पर कुछ लोग खूब थपड़ी पिटत रहे त कुछ लोग इनका से दूरी भी बना लेत रहे । अपना बड़बोलापन से ई कुछ लोगन के प्रिय भी रहन बाकिर जेकरा बारे में बोल के लजवावे के काम करस उ रमेशर के खिलाफ हो जाय । बात अइसन करस कि लागे जइसे सब कुछ इनके जानकारी होखे । लागत रहे कि सब बड़का लोगन से इनकर परिचय बा ।

कुछ दिन असही बीतल रमेशर बीमार चले लगले । बीमारी के वजह रहे उनकर उल्टा-पुल्टा खाइल, जहे जास ओहिजे जवन मिले खाये से ना मानस । बीमारी शरीर मे अइसन घर कइलस कि घर के लोग भी परेशान । दवा-दारू चले लागल, कई गो डाक्टर के देखावल गइल बाकिर बीमारी बढ़त गइल । रमेशर के सारा शरीर के चेकअप भइल त रोग के पाता लागल बाकिर बहुत देर हो गइल रहे । रमेशर शरीर से बहुत कमजोर हो गइल रहलन । डाक्टर खान-पान पर बहुत परहेज करे के कह देले रहे आ साथे-साथ दवा भी चले लागल । घर परिवार के लोग रमेशर के अपना से बहुत देख-भाल करे लागल । छव महीना दवा चलला के बाद रमेशर के तबियत पहिले से ठीक हो गइल । ज्यादातर उ घरही में समय बितावे लगले । उनकर जेतना शुभचिंतक लोग रहे उनका से आके भेंट मुलाकात करे आ रमेशर पहिले के तरह उ सब से बतकुच्चन करस ।

एक बेर हम आ हमार मित्र कमेशर के बात भइल कि चलल जाय रमेशर से भेंट करे । कमेशर कहले कि रमेशर त पूरा तरह से ठीक हो गइल बाड़न पहिले जइसन !

हम कहनी की ओसे का ढेर दिन हो गइल भेंट कइला चलल जाव मिल के आइल जाई । जाड़ा के

www.bhojpurisahityangan.com

दिन रहे कमेशर कहले कि भाई उनकरे इलाका में लइकवा के स्कूल के स्वेटर बनवावे खातिर दिहल बा, चलल जाय रमेशर से भेंट भी क लियाई आ स्वेटरवा भी लेले आवल जाई । हमनी दूनू आदमी पहुँचनी जा रमेशर के घर पर, आवाज दिहल गइल - रमेशर भाई !
ओने से रमेशर निकलत कहले के ह ?

''आरे भाई तू लोग । आव-आव जा बईठ । कहजा हाल समाचार ।''
हमनी कहनी जा कि तोहरे से मिले आइल रही जा । अब तबियत ठीक बा नू! रमेशर कहले, 'ह पहिले से ठीक बा, दवा चल रहल बा ।'

कुछ देर बात-चीत भइल । फेर चाय-पानी पीके हमनी कहनी जा कि रमेशर भाई चलत बानी जा, एहिजे बगल से कमेशर के लइका के स्वेटर लेवे के बा बनवावे खातिर दिहल रहे । तब ले कमेशर कहले कि स्वेटरवा वाला पुरजा त घरही छूट गइल स्वेटर कइसे मिली बिना पुरजा के ? ई सुन के रमेशर कहले कि हमरे नाम रमेशर ह ! कवना दोकान में दिहल बा बनवावे खातिर ? हम साथे चलत बानी, हमरा के सउसे इलाका चिन्हेला । हम कहनी की ठीक बा चलल जाय । तीनो आदमी चल देनी जा दोकान के ओरी । दोकान पर पहुँच के कमेशर कहले कि लइका के स्वेटर देले रहनी ह, बनवावे खातिर बन गइल बा का ? दोकानदार कहलस कि पुरजा भा स्कूल के डायरी देखाई ।

कमेशर कहले - पुरजा त नइखी लाइल ।
तब ले रमेशर आगे अइले आ दोकानदार से कहले कि हमरा के नइख चिन्हत ।हमरे नाम रमेशर ह !

दोकानदार रमेशर के ऊपर से नीचे देखलस आ कहलस कि ना हम तोहरा के नइखी जानत । आ जब ले पुरजा लेके ना अइब स्वेटर ना मिली । मुँह लटकइले दोकान से बहरी आवे के पड़ल । एह से की रमेशर के केहू चिन्हते-जानत ना रहे । हम कमेशर से कहनी, च्चल रे भाई । पुरजा लेके अईहे आ स्वेटर ले जइहे । एह बतकुच्चन करे वाला के फेरा में कहा पड़ गइनी जा ।

www.bhojpurisahityangan.com

लघुकथा -

ट्रांसफार्मर ना लागी

टोला-मोहल्ला में बिजली के समस्या हो गइल रहे । रात-रात भर बिजली कटल रहे, गरमी के मारे लोगन के बुरा हाल रहे । एही मोहल्ला में गौरी नेता रहत रहले । बहुत सक्रिय नेता रहले । बिजली के आँख मिचौनी से परेशान उहाँ के लोग गौरी नेता भीरी गइल आ कहलस , 'ई बिजली के आँख मिचौनी कब ले चली ? कब तक नाया ट्रांसफार्मर खातिर मोहल्ला के लोग राह निहारी ?

ओही लोगन में नेता जी के एगो खास चेला रहे गंजू । गंजू नेता जी के कहलस, 'आज सभे केहू के लेके चलल जाय विद्युत अभियंता भीरी ।'
गौरी नेता भी आव देखले ना ताव आ सभे लोगन से कहले कि हमरे रहते मोहल्ला में बिजली के समस्या रही ? आज बिजली विभाग के घेराव कइल जाव नाया ट्रांसफार्मर खातिर । हमरा रहते ट्रांसफार्मर ना लागी ? आज लेके रहेकेबा ।

नेता जी भूमिका बनावत सभे लोगन के लेके चलले बिजली विभाग के ऑफिस आ रास्ता में कहते रहले कि देखिह लोग आज ट्रांसफार्मर कइसे लेके रहब ।

बिजली विभाग पहुँच के गौरी नेता लोगन से कहले कि तू लोग एहिजे बहरी इंतजार कर हम विद्युत अभियंता के ऑफिस में भीतर जात बानी आज नाया ट्रांसफार्मर लेके रहे के बा । नेता जी अंदर गइले । ढेर देरी भइल त उनकर चेलवा गंजू सोचलस कि हेतना देरी काहे होता ? नेता जी भीतरी का कर ताड़े तनी लुका के खिड़की से देखल जाय ।

चेलवा देखलस कि नेता जी बिजली अभियंता के गोड़ पकड़ के बइठल बाड़े आ रिगिर कइले बाड़े कि माई-बाप हमार इज्जत के सवाल बा नाया ट्रांसफार्मर मोहल्ला खातिर पास करा दी ना त साथ आइल मोहल्ला के लोग हमरा के ना छोड़ी । ढेर देरी तक गोड़ पकड़ला के चलते बिजली अभियंता कहले कि ठीक बा तोहरा मोहल्ला खातिर हम नाया ट्रांसफार्मर बुक करत बानी । अतना कहते भइल की नेता जी गोड़ पर से उठले आ बहरी आके लोगन से कहले कि, 'हमरा रहते मोहल्ला में नाया ट्रांसफार्मर ना लागी ? चल लोग ट्रांसफार्मर बुक हो गइल जल्दिये लाग जाई ।'

बाकिर ट्रांसफार्मर कइसे मिलल ? नेता जी के सब खिलकट उनकर चेला गंजू देख लेले रहे । गंजू कहलस, 'जय हो नेता जी, ट्रांसफार्मर दिवा देनी ।'

www.bhojpurisahityangan.com

विष्णुदेव तिवारी

गांव - तिवारीपुर, पत्रलय - दहिवर,
जिला - बक्सर (बिहार)
पिन- 802116

विष्णुदेव तिवारी

भोजपुरी के पहिला यर्थाथवादी उपन्यास 'ऊसर के फुल'

अपना प्रमुख आलोचना-पुस्तक 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' में डॉ0 विवेकी राय विक्रमा प्रसाद के उपन्यास 'भोर मुसकाइल' के भोजपुरी के पहिल यथार्थवादी उपन्यास कहत बाड़े। बाकिर, ऊ इहो कहत बाड़े कि एह में उपन्यासकार समस्या के प्रेमचंद नियर समाधानो देबे लागत बा जे आजु के साहित्य में कवनो मतलब के नइखे रह गइल। भोजपुरी के अन्य उपन्यासन के चरचा करत, अपना एही किताब में आगे बढ़ला प, ड0 राय नरेन्द्र शास्त्री के 'ऊसर के फूल' के बारे में लिखते बाड़े, "भोजपुरी कथा-साहित्य का विकास में बलिया के नरेन्द्र शास्त्री के उपन्यास 'ऊसर के फूल'(76) महत्वपूर्ण स्थान बनवले बा काहे कि तमाम आदर्शवादी आ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी`तियान के बीचे इहे एगो ठोस यथार्थवादी`ति लउकत बा। मतलब साफ बा कि भोजपुरी के पहिला यथार्थवादी उपन्यास 'ऊसर के फूल' (ही) ह, 'भोर मुसुकाइल' ना।

पं गणेश चौबे अपना किताब 'भोजपुरी के प्रकाशित ग्रंथ' में 1976 तक 1द्व उपन्यासन के नाँव लेले बाड़े। भोजपुरी के पहिल उपन्यास रामनाथ पाण्डेय के 'बिंदिया' ह, जवन 1956 में छपल रहे। आज भोजपुरी उपन्यास साहित्य अपना के मात्रा आ गुणवत्ता दुनू लेहाजे समृद्ध मान रहल बा त एकरा पीछे 'ऊसर के फूल' जइसन नेऽइ के पाथरन के पोख्ता आधार के महत्व बहुत बा।

दरअसल यथार्थ आ आदर्श में कथानक ना, ओकरा निबाहे के लूर अर्थात ट्रीटमेंट के भूमिका निर्णायक होखेले। उपन्यासकार 'ऊसर के फूल' में खाली एगो प्रस्तोता के रूप में सोझा आवत बा, प्रवक्ता के रूप में ना। तीन गाँव, मुड़ियारी, खरौनी आ बाँसडीह के प्रायः दर्जन भर चरित्र भल चाहे अनभल के रूप में सामने आवत बाड़े आ आपन छाप छोड़त बाड़े। इहाँ तक कि गौण से गौण चरित्र भी आपन सार्थकता साबित करता बा, जइसे मंदिर के पुजारी जी। रघुनाथ के मेहरारू पार्वती जब उनका से पूछत बाड़ी कि एह संसार में आदमी के का करे के चाहीं बाबा? तब उनकर जवाब भारतीय जीवन के चिर परिचित दर्शन होत बा। इहे भारत के आदर्श ह आ इहे जिनगी के यथार्थो ह। पुजारी जी कहत बाड़े, "एह संसार में केहू केहू के ना ह। आपन करमे साथ देला। देंहि ना रहे, करम रहि जाला। मौसम बदलेला। साल गुजरि जाला। इतिहास नया पुरान होता रहेला। बाकिर, जेकर करम नीक बा, साँच बा, सेवा वाला बा, उहे अमर बा।"

तीन गाँव के जटिल कथा के एगो बरिआर कथानक में बान्ह के उपन्यासकार अंततः ई सनेस देबे में सफल रहत बा कि संसार में करमे प्रधान ह आ जे जइसन करी ओइसन पाई। उपन्यास में बेसी समय तक

www.bhojpurisahityangan.com

रहे वाला बाँसडीह गाँव के शमशेर सिंह आखिर में अपना मेहरारू के हत्यारा होके सजा भोगे खातिर अभिशप्त होत बा। शमशेर के चरित्र ओह युवा के प्रतिनिधित्व करत बा जे गलत से गलत राह चलके जिनगी के मउज लूटल चाहत बा एगो अइसन चरित्र, जेकरा पासे अच्छा-खासा जमीन बा, सुंदर आ प्रेम करेवाली मेहरारू बिया, मयगर आ गुनगर बहिन बिया ऊ शिवराम जइसन मूढ़, गैर कानूनी काम करे वाला आदमी के प्रलोभन में फँस के, अपना के पाप के ओह अधम-तल में पहुँचा देत बा जहाँ से उबर पावल असंभव बा।

शमशेर के बहिन सेवती मुड़ियारी गाँव के रामचंद्र सिंह से बियहल गइल बाड़ी बाकिर दुर्भाग्य इनको डँग नइखे छोड़त। ससुरे-नइहरे कतहूँ चैन ना, सुख ना। देयादिन लोग के खोभसन, जरनापा सहत ऊ ससुरा में सब सहत बाड़ी कि उनकर मरद कहला में बा आ आशा बा कि उनकरा बाँझ कोख में फर लागी, बाकिर सब सोचलका तँवा जात बा। निरू संतान सेवती के मरद अंत में दोसर बियाह क लेत बा आ उनकरा एगो दोसरा गाँव में, अपरिचित लोगन के बीच नोकर बन के, जिनगी खेवे खातिर मजबूरी होखे परत बा। सेवती के प्रति सहानुभूति रखियो के पाठक उनका कमजोर चरित्र से प्रभावित नइखे होत।

'ऊसर के फूल' संयुक्त परिवार के विघटन के करुण-कथा ह, जहाँ सेवती अस दुखियारी आपन सब धन समर्पित कइयो के खूँख के खूँख रह जात बाड़ी। ना परिवारे बचत बा, नूँ संसारे मिलता बा।

'ऊसर के फूल' के दूसरा संस्करण 2025 में छपल। एह में शास्त्री जी के पुत्री अर्चना श्रीवास्तव के योगदान विशेष बा। एह उपन्यास के महत्व के रेखियावत ऊ अपना संपादकीय में लिखत बाड़ी, "एह उपन्यास के बारे में हम अतने कहब कि ई एगो ठोस यथार्थवादी ति बा जवना में लेखक कतहीं भाषण नइखे करत, क्रोध, क्षोभ नइखे उगिलत। चुपचाप ऊ आजु के जीवन के असलियत खोल देता बा कि पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था ही गाँव के सीधा-सरल मनई के मौत के कारण बा।"

अपना मंतव्य 'ग्राम्य संवेदना के अनमोल उपन्यास' में भगवती प्रसाद द्विवेदी एह उपन्यास के एगो दमदार आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास कहत बाड़े। द्विवेदी जी के विचार से एह उपन्यास के एगो पात्र राजेन्द्र, जे कहानी लिखता बा, नरेन्द्र शास्त्रिए के आपन रूप ह। डॉ0 विवेकी राय राजेन्द्र में अमृत लाल नागर के उपन्यास 'अमृत और विष' के कथाकार अरविंद शंकर के प्रतिरूप देखत बाड़े।

पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था गाँवन के चेहरा आ चरित्र दूनों बदल दिहलस। अइसना में चरित्र के स्खलन सामान्य बात हो गइल। 'ऊसर के फूल' के अधिकांश पुरुष-पात्र एह स्खलन के जद में आवत बाड़े। राजेन्द्र एह जद में नइखन आवत। मालती के चेहरा चेचक के कारने कुरूप हो जात बा तबो ऊ उनका से बियाह करे खातिर नकरत नइखन। ऊ अपना के कुछ कमजोर भले पावत होखसु, ऊ अपना निश्चय से गिरत नइखन।

'ऊसर के फूल' एगो चरित्र-प्रधान उपन्यास ह जेमें कुछ चरित्र अपना करनी से समाज में प्रेरक के भूमिका निभावत बाड़े। कुछ नारी-चरित्र त अइसन बाड़े जिनका नेंइ में नारी-विमर्श के बीजांकुर निरेखल जा सकता बा, जइसे जिअनी के चरित्र, जइसे पानवाली भउजी के चरित्र।

www.bhojpurisahityangan.com

खरौनी गाँव के शिवराम के बहिन जिअनी नइहरे में जिनगी काट रहल बिया। उनका आ उनका मरद सहदेव में कुछ खटपट चल रहल बा। सहदेव जिअनी के लिआवे अपना ससुरारी आइल बाड़े बाकिर जिअनी उनका साथे नइखे जात। ऊ उनके सुनावत अपना बाबू लपेटन से कहत बिया कि तूँ बीच में जनि परऽ। ई जाके दोसर कइ लेसु! हमरा से इनके ना पटी। सहदेव जात-जात लपेटन से कहत जात बाड़े, "अब से हमार दोस मत दीह।"

शमशेर सिंह ओघरी लपेटन का घरहीं रहलन। दारू वाला काम चालू रहे। ऊ बोतल में दारू भरि-भरि माटी के गड़हा में डालत रहलन। बाद में जिअनी ओकरा के गोबर से लीप के बराबर कऽ दी।

जिअनी के सुनराई शमशेर के मन खराब कइले आवत बा। ओकर बात सुन के उनकर हियाव बढ़ जात बा। एकांता पाके ऊ जिअनी के गाटा पकड़ लेत बाड़े आ कहत बाड़े कि ओकरा खातिर ऊ आपन घर-दुआर सब छोड़ दीहें। अब तऽ जिअनी के खीस पहाड़ लाँघि गइल। ऊ आँख लाले-लाले कइले शमशेर पर चढ़ि बइठल। झट से गाटा छोड़ा के उनका गाल पर दू तमाचा लगा दिहलस आ उनका के धिरिकारत कहलस, "हमरा भतरा से नीमन बाड़ऽ? मुँह त सूअर नीयर बा। ई मति बुझिहऽ कि हमसे लड़ि के गइल बा त हम ओके छोड़ देबि। ऊ हमार मरद ह। ओके दस बात हम कहबि, आ ऊ हमके जवन बुझाई तवन कहीं। तूँ के हउवऽ हमार हाथ पकड़े वाला? तोहरा धन में आगि लगा देबि। आजु से बोललऽ त करिखही हाँड़ी से कपारे फोरि देबि। कुक्कुर कहीं का।"

जिअनी के चरित्र में प्रेमचंद के कहानी 'घासवाली' के मुलिया के चरित्र लखार होत बा जे अपना चारित्रिक दृढ़ता से जमींदार चौन सिंह के छरपट छोड़ा देले रहे।

'ऊसर के फूल' के पानवाली (जोन्हिया) भी कमाल के चरित्र बा। एकरो जीवन पुरुष समाज के द्वारा पाप के गठरी बना दिहला जात बा। बाकिर, ई टूटत नइखे आ एगो हमउमिरिया विजातीय से बिआह कके सबके अचरज में डाल देत बिया।

प्रेमचंद के स्टाइल से प्रभावित एह उपन्यास में रघुनाथ आ शिवराम के हृदय-परिवर्तन के उदाहरण भी मौजूद बा।

www.bhojpurisahityangan.com

अमित कुमार पाण्डेय

एम ए (फिल्म एवं थिएटर)
(गोल्ड मेडलिस्ट)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
नेट (थिएटर स्टडीज)
सचल दूरभाष - 8738882211

अमित कुमार पाण्डेय

काल्पनिक दुनिया में भटक गइल भोजपुरी सिनेमा के गाड़ी

भोजपुरी के पहिला फिलिम 'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो' भोजपुरिया माटी के लाल पहिला राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के आशीर्वाद और नजीर हुसैन आ विश्वनाथ शाहबादी के भागीरथ प्रयास से 1962 में बनल रहे । ओकरा बाद से भोजपुरी सिनेमा उत्तर भारत के बड़हन दर्शक वर्ग खातिर मनोरंजन के प्रमुख स्रोत रहे । आपन प्रामाणिक लोक संस्कृति, सुरीला संगीत आ स्थानीय कहानी के आधार पर ई एगो अनूठा पहचान बनवले रहे । हालांकि पिछला कुछ दशक में भोजपुरी सिनेमा अपना जड़ से भटक गइल बा आ जमीनी हकीकत से परहेज करत देखल जाला, सतही आ निम्न गुणवत्ता वाला मनोरंजन के कारण कबो समाज के दर्पण रहल ई सिनेमा आजु अक्सर वास्तविकता से दूर, काल्पनिक आ तर्कहीन दुनिया में भटकत लउकत बा ।

एगो समय रहे जब भोजपुरी फिल्मन में ग्रामीण जीवन, पारिवारिक संबंधन के जटिलता, सामाजिक बुराई आ आम आदमी के संघर्ष के प्रामाणिकता से चित्रण कइल जात रहे । 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़ईबो', 'बिदेसिया', 'हमार संसार' आ ''गंगा किनारे मोरा गांव' जइसन शुरुआती फिलिम दर्शकन के ना खाली मनोरंजन करत रहे बल्कि समाज के हकीकत के भी देखावत रहे । एह फिलिमन में लोक संस्कृति के जीवंतता, पारंपरिक मूल्यन आ आम आदमी के रोजमर्रा के जिनिगी के झलक मिलत रहे जवना से दर्शक आसानी से जुड़ सकत रहलेय। बाकिर धीरे-धीरे भोजपुरी सिनेमा में गुणात्मक गिरावट आइल बा । कहानी में नवीनता के कमी, तकनीकी पहलू में पिछड़ापन, अश्लीलता के बढ़त प्रभाव आ प्रस्तुति में दोहराव लउके लागल । आज के अधिकांश भोजपुरी फिलिम वास्तविकता से दूर, एगो काल्पनिक आ तर्कहीन दुनिया में अझुराइल बाड़ी स, जवन ना त समाज के असली तस्वीर देखावेले, ना आम आदमी के जीवन के कवनो प्रामाणिक झलक देले ।

भोजपुरी सिनेमा के जमीनी हकीकत से मुँह मोड़े के पीछे कई गो कारण बा, जवन एक दोसरा से जुड़ल बा आ एह इंडस्ट्री के वर्तमान दिशा तय करेला ।

एकर सबसे बड़ कारण बा फिलिमन के क्वालिटी में भारी गिरावट । अक्सर देखल जाला कि भोजपुरी फिलिम बहुते कम बजट में आ हड़बड़ी में बनेला, जवना में कमजोर पटकथा, खराब संपादन, निम्न स्तर के छायांकन आ खराब वीएफएक्स के इस्तेमाल होला । निर्माता लोग क्वालिटी सिनेमा बनावे से बेसी जल्दी मुनाफा कमाए पर ध्यान देत बा जवना के नतीजा बा कि फिलिमन में रचनात्मकता आ गहराई के कमी होला ।

www.bhojpurisahityangan.com

आज के अधिकतर भोजपुरी फिलिम फिक्स फार्मूला पर आधारित बाड़ी सन । प्रेम त्रिकोण, पारिवारिक झगड़ा (अक्सर तर्कहीन आ मेलोड्रामा), बदला आ अपराध जइसन विषय के अलग-अलग रूप में बार-बार प्रस्तुत कइल जाला बाकी एकरा में नवीनता, मौलिकता आ सामाजिक प्रासंगिकता के कमी बा । सामाजिक मुद्दा, समकालीन चुनौती आ आम आदमी के असली समस्या पर बहुत कम फिल्म बनल बा ।

सबसे बड़ा चिंताजनक रुझान भोजपुरी सिनेमा में फूहड़ता आ अश्लीलता के बढ़त प्रभाव बा । कई गो फिलिमन में बेवजह दोहरा मतलब वाला संवाद, फूहड़ गीत आ आपत्तिजनक दृश्य देखावल जाला जवना के दर्शक खास कर के पारिवारिक दर्शक नापसंद करेलें । एहसे सिनेमा के गुणवत्ता त घटते बा बलुक समाज में ओकर छवि भी कलंकित हो जाला । मनोरंजन के नाम पर परोसल ई अश्लीलता वास्तविकता से बहुते दूर होला आ सस्ता लोकप्रियता हासिल करे के कोशिश करत लागेला ।

भोजपुरी सिनेमा अन्य क्षेत्रीय सिनेमाघरन (जइसे तमिल, तेलुगु, मलयालम) के तुलना में तकनीकी रूप से पिछड़ल बा । आधुनिक तकनीक, जइसे कि उच्च गुणवत्ता वाला कैमरा, बेहतर साउंड डिजाइन आ प्रभावी वीएफएक्स, के इस्तेमाल फिलिमन में बहुत कम होला । सीमित बजट आ प्रशिक्षित तकनीशियन के कमी का चलते फिलिमन के तकनीकी पहलू कमजोर बनल बा जवना से दर्शकन के अनुभव पर असर पड़ेला ।

भोजपुरी फिलिमन के अक्सर बड़का सिनेमाघरन आ मल्टीप्लेक्सन में उचित एक्सपोजर ना मिलेला द्य सीमित वितरण नेटवर्क आ सिंगल स्क्रीन थियेटर पर भारी निर्भरता के कारण ई व्यापक दर्शक वर्ग तक ना पहुँच पावेला । एकरे नतीजा बा कि निर्माता गुणवत्ता सुधारे आ अधिका दर्शकन तक पहुचे खातिर कोशिस भी ना करेले ।

कलाकारन के दोहराव आ ओवर-एक्टिंग भी एमे बड़ कारण बा । भोजपुरी सिनेमा में अक्सर कुछ कलाकारन के बोलबाला होला, जे लगातार एके जइसन भूमिका निभावत देखल जालें । कई बेर कलाकारन के ओवरएक्टिंग भी दर्शकन के निराश कर देला आ सिनेमा के अविश्वसनीय बना देला । नया आ प्रतिभाशाली कलाकारन के मौका ना मिलला का चलते सिनेमा में ताजगी आ नवाचार के कमी बा ।

एगो जिम्मेदार कला माध्यम होखला के नाते सिनेमा के समाज पर बड़ा असर पड़ेला । हालांकि भोजपुरी सिनेमा अक्सर अपना सामाजिक जिम्मेवारी से परहेज करत लउकेला । अंधविश्वास, जातिवाद और महिला के प्रति नकारात्मक रवैया के बढ़ावा देवे वाला सीन फिल्म में भी देखाई देता, जवन कि समाज खाती नुकसानदेह बा ।

भोजपुरी सिनेमा के जमीनी यथार्थ से दूर रहला से और लोगन के समस्या, आकांक्षा ना दिखाई देला के चलते दर्शकन के जुड़ाव खतम हो जाला । कबो अपना लोक संसेंति आ परम्परा के वाहक भोजपुरी सिनेमा अब अक्सर पाश्चात्य आ अउरी क्षेत्रीय सिनेमा के नकल करत देखल जा रहल बा । एकरा चलते एकर अनूठा सांस्कृतिक पहचान क्षीण हो रहल बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

हालांकि भोजपुरी सिनेमा के सामने एह घरी बहुते चुनौती बा बाकिर एकरा पुनर्जागरण के संभावना आजुओ मौजूद बा । कुछ निर्माता निर्देशक आ अभिनेता अइसनो बाड़े जे बढ़िया आ क्वालिटी वाला फिलिम बनावे के कोशिश में लागल बाड़े । एह इंडस्ट्री में युवा प्रतिभा भी आ रहल बाड़े जे नया सोच आ ्ष्टिकोण से काम कइल चाहत बाड़े । ए फिल्मकारन में नितिन चंद्रा ,अवधेश मिश्रा और उज्जवल पांडेय के नाम प्रमुख बा ।

भोजपुरी सिनेमा अपना समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर आ बड़हन दर्शक वर्ग का बावजूद एह घरी जमीनी यथार्थ पर आँख मूँद के एगो खोखला मनोरंजन उद्योग बन रहल बा द्य गुणवत्ता के अनदेखी कइल, कहानी के कमी, अश्लीलता के बढ़त प्रभाव आ तकनीकी पिछड़ापन जइसन कारण एह सिनेमा के दर्शकन से दूर कर दिहले बा द्य बाकिर अगर निर्माता, निर्देशक आ अभिनेता अपना गलती से सीख लेत बाड़े आ गुणवत्ता, नवाचार आ सामाजिक जिम्मेदारी पर ध्यान देस त भोजपुरी सिनेमा एक बेर फेर से आपन खोवल पहचान वापस पा सकेला । आज जरूरत बा सिनेमा के वास्तविकता के नजदीक ले आवे आ ओकरा के एगो सार्थक आ मनोरंजक कला माध्यम के रूप में स्थापित करे खातिर सामूहिक प्रयास के । ना त जमीनी यथार्थ से पीठ फेरे वाला ई सिनेमा धीरे-धीरे आपन चमक खो दी आ इतिहास के पन्ना तक सीमित रह जाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

सुनील कुमार यादव

प्रबंध संपादक
दीया बाती
भोजपुरी, त्रैमासिक, ई पत्रिका
प्रबंधक - फीनिक्स इंटरनेशनल स्कूल
निमिया पोखरा- भगवानपुर, बलिया
सचल दूरभाष - 9839159190

सुनील कुमार यादव

चलत गाड़ी राम भरोसे

परानपुर गांव । हमार गांव । जिला त बलिया ह, बाकी बा एकदम कोनासी में । ऐतना कोना - अंतरा में बा कि ओकरा के दीया बाती ले के खोजे के परेला । ई बात एह से कहतानी कि भारत सरकार के कवनो योजना हमरा गांवे चहुंपत - चहुंपत दांत चियार देला । हमरा गांव में कवनो चिट्ठी पतरी भेजे के होला त जिला बलिया ना लिखाला, बलुक जिला बक्सर लिखाला । बलिया लिख देब त बंड़ेरा अस ऊ चिट्ठी बउड़ियात रहि जाई । कइसो - कइसो त पछिला साल बिहार से बिजली के तार खींच के बिजली हमरा गांव में पहुंचावल गइल ह, ना त गांव में अइसन बुझात रहल ह कि जिनिगी अन्हरिए में बीती ।

गांव के लइका पढ़ि लिखि मत जा स एह से सरकारी स्कूल खाली नामे के बा । टूटल, भंसल स्कूल में भी लइका सब मेहनत क के खूब आगे बढ़लन । बाकी प्रधान जी भा शिक्षा विभाग केहू आजु ले कुछ खास काम ना कईल । गांव वाला के केतना कहला प अबकी बेर प्रधान जी शिक्षा विभाग के एगो चिट्ठी लिखलन कि स्कूल के देवाल गिर गईल बा, ओकरा के ठीक करवा दिहल जाव ।

केतना चिरउरी प स्कूल के बाउंड्री खातिर **2** लाख मिलल ।

बाकी शिक्षा विभाग अहसान कइले रहे त ओकर कमीसन बनबे करी । त, विभाग आपन **40** हजार कमीसन काट लिहलस आ **1-60** लाख भेज दिहलस ।

अब डीपीओ साहब काहें खातिर पाछा रहसु । उहो त फइलिया प साइन क के अहसान कइले रहलन, त उनको कमीसन भइबे कइल । उहों के आपन मेहनताना **30** हजार ड्राइवर के खाता में मंगवा लिहनी ।

ई कुल ममिला में हमनी के मुखिया जी नीमन हई । उहां के कमीसन ना मांगेनी । उहां के सीधे अपना खाता में कमीसनवे भेज लेनी । त उहों के ने **10** हजार के मलाई चाभि लिहनी ।

ठेकेदार साहब बिना रंगदारी दिहले काम कइसे करा लिहें । त गाँव के रंगदारन के जइसही खबर लागल कि कुछ काम होखे वाला बा त आपन हक हिसा खातिर ठेकेदार साहब के दुआर प चढ़ि के, प्रेम से फफेलिया के **50** हजार के नेग नेवता के वसूली क लिअउवे लो ।

बचल **70** हजार ।

माट साहब ईमानदार आदमी रहनी। उहां के सबसे सस्ता ईंटा मंगववनी ।

अभी काम के सीताराम होखही के रहे तले केनियो से कुछ क्रान्तिकारी फेसबुकिया, माइकधारी पत्रकार साहब आ गइल लो ।

क्रान्ति के कीरा कुलबुलाए लगुए त दूं - चार गो ईंटा तुरूवेलो आ चिकर - चिकर के वीडियो

www.bhojpurisahityangan.com

बनावे लगुवे लो ।

'देखिए ! सरकारी पैसों का दुरुपयोग ! तीन नंबर का ईंट देखिए । माट साहब का भ्रष्टाचार देखिए !'

लांगा से गंगा जी भी दूरे रहेली । माट साब त बहुत बढ़िया आदमी रहनी एह से खाली रूपया 5 हजार में ही सौदा तय क दिहनी ।
'अब वीडियो ना डालल जाई ।'

देवाल केहू तरे बन गइल । लइका खूब खुस भइलन । उनका का मालूम रहे कि ई देवाल ना ह, कब्र के नेव ह । एक दिन खेलत लइकन प उ देवाल गिर गइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

देव कुमार सिंह

परिखरा, बलिया
सबल दूरभाष- 7376866881

देव कुमार सिंह

पौराणिक

बरसाना क बहादुर बिटिया

ई पुराण में नईखे, जवन हम लिखत बानी । एकर कवनो साक्ष पुराण में ना मिली, बाकिर कुछ बात घटना क्रम देखला पर पता चल जाला । अपना दामाद कंस के वध भयिला पर खिसियाई के मगध के राजा जरासंध अठारह बार मथुरा प आक्रमण कईलस । जब ऊ अठारहवां बेर आइल त मथुरा में एगो चिरई भी ना रहे । कृष्ण अपना पूरा परजा सहित द्वारिका में बसि गईल रहलन । सोचे के बात बा कि कंस ओतना बड़ फौज लेके सेतिहे में लवट जाई ? ऊ सटले गोकुल, वृन्दावन, बरसाना प धावा बोललस । ओ समय खाली उहां औरतें रहली स । पुरुष नारायणी सेना में भर्ती होके द्वारिकापुरी चल गइल रहे लोग । ऊहां राधा आ उनकर सहेली गोपी लोग रहे । अब तनी कृष्ण के रास, महारास लीला प सोचल जाव ।

ओ घरी गोकुल, बरसाना में दूध, दही, माखन, घी बहुते होत रहे । कर यानी टेक्स के रूप में कंस के दरबार में गोपी लोग पहुंचावे । कृष्ण मटुकी फोड़ के एकर विरोध करस आ ग्वाल बाल के खिआवस आ कहस कि दूध, दही, माखन जे पैदा करत बा उहे खाई, बाचीं तब बेचाई, कर ना दिआई । कृष्ण बंशी बजावस त जमुना नदी के किनारे मैदान में सब लइका लइकी इकट्ठा होखस आ लाठी, भाला, तलवार, धनुष, बाण चलावे के अभ्यास करावस । रास, महारास, ना रचावस । इन्द्र देवता के पूजा के गांव में परम्परा रहे । ओह परम्परा के तोड़ के गोवर्धन पर्वत आ गाय के पूजा के नया परम्परा चलवले । प्रेंति से प्रेम, वृक्ष, नदी, पर्वत से लगाव, जुड़ाव लोगन में बढ़वले ।

एगो चीर हरण के प्रसंग आवेला भागवदपुराण में । ओ घरी कृष्ण के उमिर सात बरिस रहे । लइकाई में हमनियो के नदी, तालाब में लंगटे होके नहइले बानी जा । जल में कीड़ा मकोड़ा भी होले, सेहत खातिर ई ठीक ना ह । कृष्ण ई बाति समझावे खातिर ई खेला कईले होईहे । गोप गोपी लोगन के भी उमर सात, आठ बरस से ज्यादा ना होई ।

जब अक्रूर जी कृष्ण बलराम के रथ प बइठाके ले जाए लगले तब गोप बालक सब लुक छिप के संगे गईले । सब गोपी बुझली कि कंस के आदेश अक्रूर कृष्ण, बलराम के जबरदस्ती मथुरा ले जात बाड़े त अगवाह राह से चलि के रथ के घेर लिहल लोग । सबके हाथ में धनुष बाण रहे, कमर में तलवार रहे । कृष्ण ओ लोगन के समझवले कि ई हमार ताऊ जी हवे, अपना मन से हमनी के जात बानी जा । तब ऊ लोग रथ के

www.bhojpurisahityangan.com

जाए दिहल । अब पहिलका प्रसंग सुनी ।

जब जरासंध तेईस अक्षौहिणी सेना लेके गोकुल प आक्रमण कईलस तब राधा के अगुआई में सब गोपी भयंकर लड़ाई लड़ली । ओकर सब सेना मरा गईल । आ ऊ आपन जान बचाके परा गईल । फेरु कबहूं झांके एने ना आइल । पूरा ब्रजमंडल में खुशी खिलखिला गईल । सब लोग मिलि के राधा जी के रानी बनावल आ तबे से ऊ राधा रानी, श्रीजी, लाड़ली जी कहाए लगली । उनका राज में केहू भूखा ना रहे, कवनो परकार के अभाव ना रहे, केहू बीमार आ लाचार ना रहे । दूध, दही, घी, मक्खन के बिछीलहर भईल रहे । बाकीर पुरुष के वर्चस्व वाला समाज में लोग के राधा जी आ गोपी लोगन के वीरता घोंटाइल ना । स्त्री के प्रेम, भक्ति, समर्पण देखावे खातिर मन से कहानी

गढ़ि के बड़का बड़का ग्रन्थ लिखि दिहल लोग । कृष्ण के राधा से प्रेम रहित त मथुरा से वृंदावन के दूरी कवनो ढेर नइखे । कंस के मारला के बाद एको दिन खातिर ऊ जरूर आइल रहते ।

हम कई बार मथुरा, वृन्दावन गईल बानी आ ऊहवाँ के औरतन के गाय के खियावल, दुहल, अथक मेहनत, निडरता, बहादुरी, आचरण के पावनता देखि सुनि के इहे कहानी साँच बुझाता ।
जय बरसाना के बहादुर बिटिया ।
जय बहादुर गोपी लोग ।

www.bhojpurisahityangan.com

विनय बिहारी सिंह

सुखपुरा, बलिया
शिक्षा - बी.एससी., एम.ए.
काम - पिछला 38 साल से पत्रकारिता, 'आज', 'प्रभात खबर' समाचार पत्र और टाइम्स ऑफ इंडिया समूह क पत्रिका 'दिनमान' में उपसंपादक / रिपोर्टर रहला के बाद लगभग 22 साल तक इंडियन एक्सप्रेस समूह के समाचार पत्र 'जनसत्ता' में उप संपादक, रिपोर्टिंग। सन 2012 में वहां से सेवा निवृत। पूर्व प्रधानाचार्य माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कोलकाता स्टडी सेंटर इंस्टीट्यूट आफ जर्नलिज्म ।

विनय बिहारी सिंह

बलिया जिला के तीन गो अउरी जाग्रत मंदिर

रउरा सभे जानते बानीं कि बलिया जिला महान ऋषि भृगु जी के तपस्थली ह । ऊहे भृगु जी जवन ज्योतिष के अमर पुस्तक लिखले बाड़े - "भृगु संहिता" । त भृगु ऋषि के प्रभाव से उच्च कोटि के बहुते साधु-संत लोग एह जिला में आ के रहल आ बलिया जिला के धन्य कइल लोग । ओही में से कुछ साधु-संत एइजा जगह-जगह जाग्रत मंदिर तइयार कइल लोग । आजु बलिया जिला के कुछ अइसने जाग्रत मंदिरन के बारे में आईं चर्चा कइल जाउ । सबसे पहिले बाबा बालखंडीनाथ के मंदिर । बलिया से बांसडीह जाए वाला रोड पर दिउली ग्राम पंचायत में बाबा बालखंडीनाथ के मंदिर बा । त अद्भुत काहें बा ई भगवान शिव के मंदिर । एइजा भक्त लोग अपना मनोकामना पूर्ति खातिर घंटी बान्हेला । ओइजा के एगो पुजारी जी बतउन कि एह मंदिर में देश भर से लोग आवेला । आ एइजा सबकर मनोकामना पूरा हो जाला । एही से लोग घंटी बान्हत रहेला । सबकर मनोकामना ? उत्सुकता से हमहूं ओह मंदिर में गइनी । सचहूं ओइजा धातु के अनगिनत घंटी बान्हल रहली सन । अचानके मन परल घंटी भा घंटा "ऊ" ध्वनि के प्रतीक है, जवना के हमनी के धार्मिकध्आध्यात्मिक ग्रंथ प्रणव ध्वनि कहले बाड़े सन । कहल बा कि प्रणव ध्वनि केहू उत्पन्न ना क सकेला । ई ध्वनि अपने आप प्रकट होले आ "तैल मिव धारम" माने तेल के निरंतर धारा जइसन समूचा ब्रह्मांड में व्याप्त बिया । "ऊ" शब्द के ईश्वर ध्वनि कहल बा । जे ओंकार ध्वनि से एक हो जाई ऊ ईश्वर से एक हो जाई । त एही से घंटी बान्हल देखि के भक्त लोगन के आ बाबा बालखंडीनाथ के हम प्रणाम कइनी । बाबा बालखंडीनाथ मंदिर के निर्माण के लेके एगो कथा बा '

एगो राजा रहले जिनकर नांव रहे सुरथ । राजा सुरथ कौनो युद्ध में बुरी तरह हार गइले । दुखी हालत में ऊ धरती के गर्भ से निकलल बाबा बालखंडी नाथ के पूजा आ जप करे लगले । कुछ दिन बाद चमत्कार भइल आ राजा सुरथ पर दैवीं पा भइल । राजा के लागल कि उनकर शक्ति फेर बढ़ि गइल बा । ऊ शारीरिक आ मानसिक रूप से बलवान हो गइल बाड़े । भक्ति के आनंद में ऊ बाबा बालखंडीनाथ के ई मंदिर बनवा दिहले । फेर समय-समय पर एह मंदिर के मरम्मत आ रंगरोगन होखे लागल ।

छोड़हर के राममंदिर में भगवान राम, सीता माता, लक्ष्मण जी, रामभक्त भगवान हनुमान जी आ एगो खूबे सुंदर शिवलिंग देखि के मन मुग्ध हो गइल । एह मंदिर के ओइजा के एगो बड़ पुलिस अधिकारी रिटायर भइला का बाद बनवले बाड़े । ई पुलिस अधिकारी भगवान राम के आपन इष्टदेव मानत रहले । एतना सुंदर मंदिर देखि के ओह दिवंगत पुलिस अधिकारी के मने मन आभार जतवनीं । कहल बा कि राम

www.bhojpurisahityangan.com

मंत्र बहुते सहज आ प्रभावकारी मंत्र ह । गोस्वामी तुलसीदास लिखले बाड़े- 'जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करहिं सब कोई' । जेकरा पर राम जी कृपा क दिहें, ओकरा पर सब कृपा करी । ओकर हर काम आसान हो जाई । राम मंत्र के महिमा अपरंपार कहल बा । राम के नाव अनपढ़ आदमी भी क सकेला । हालांकि आजकाल शायदे केहू अनपढ़ होई । छोड़हर के मंदिर में ढुकत का घरी ई अनुभव भइल कि जैसे सचहूं कौनो राम दरबार में जातानी । ओइजा से आगा बढ़नी त ब्रह्माणी मंदिर जेकरा के भोजपुरी में बरमाइन मंदिर कहल जाला का ओर चल दिहनी ।

ब्रह्माणी मंदिर के एगो रोचक कथा बा । माता के ब्रह्माणी काहें कहल जाला ? निराकार ईश्वर के ब्रह्म कहल जाला । आ ब्रह्म के माता रूप के ब्रह्माणी कहल जाला । एकर मतलब ई कि भगवान के माता रूप के कई गो नांव में से एगो नाव ब्रह्माणी ह । ईहो बहुते जाग्रत मंदिर ह । कहल जाला कि रउरा कौनो मनोकामना लेके जाईं आ ऊ मनोकामना शुभ होखे त माता ब्रह्माणी ओकरा के जरूर पूरा क देली । ओइजा भक्त लोगन के भीड़ लागल रहेला । त ई मंदिर बलिया से सिकंदरपुर जाए वाली सड़क पर हनुमानगंज का लगे बा । ओइजा हम एगो भक्त मेहरारू से पुछलीं कि बरमाइन (ब्रह्माणी) मंदिर के महिमा के बारे में कुछ बताईं । त ऊ कहली कि हम त एतने जानतानी कि जब कौनो दुख परेला त हम एइजे दउरल आवेनीं । परसादी चढ़ावेनी, पूजा क के प्रणाम करेनी त हमरा भीतर शांति नियर बुझाला । आ धीरे-धीरे हमार ऊ दुख दूर हो जाला । केहू दोसरा से पूछीं कि एह मंदिर के महिमा का बा, त हम जतना आदमी से पुछनीं, सब ओह मेहरारू के बात के पुष्टि कइल । त ईश्वर भक्ति के कई गो रूप रउरा देखे के मिली । नारद मुनि नवधा भक्ति के वर्णन कइले बाड़े । नवधा भक्ति के चर्चा रामचरित मानस में भी आइल बा । भगवान राम जब शबरी के नवधा भक्ति के बारे में बतवले त शबरी के आनंद के सीमा ना रहे ।

नवधा भगति कहउं तोहि पाहीं,
सावधान सुनु धरु मन माहीं ।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा,
दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ।।

त नवधा भक्ति के महिमा अपरंपार बा । संत लोगन के संगति क के ओह लोगन के बात के श्रद्धा से श्रवण, राम कथा के प्रसंग चर्चा, कीर्तन, स्मरण, जप, पूजन, चरण सेवा, अर्चना आ दास्य भा सख्य भाव ।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चना वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् •

त मंदिर यात्रा से बहुत कुछ मिलल । प्राचीन कथा त सुने के मिलबे कइल, भक्ति के तरीका भी एक बार फेर याद आ गइल। त हमनी के नौ तरह से भक्ति में कौनो एगो ध लेब जा त जीवन धन्य हो जाई । बहुत नास्तिक आदमी बाड़े जे धर्म आ ईश्वर के नाव सुनि के मुंह बिजुका देले । ओकरा खातिर एगो बहुत प्रचलित कथा बा- एगो राजा अपना विद्वान मंत्री से पुछले कि तू हमरा के ईश्वर दर्शन करा सकेल । त मंत्री कहले कि

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा के एक महीना के समय दीं । मंत्री जी बहुत परेशान भइले । भगवान के दर्शन ऊ खुदे नइखन कइले त राजा के कहां से करवा दिहें । उनका के चिंतित देखि के उनकर जवान लइका पुछलस कि पिता जी काहें चिंतित बानीं । मंत्री जी राजा के प्रश्न सामने राखि दिहले । उनकर लइका कहलस कि ई कौन भारी बात बा । रउरा हमरा के राजा के लगे ले चलीं । हम उनका के आजे भगवान के दर्शन करा देब । मंत्री जी अपना लइका के राज दरबार में लिया गइले आ राजा से कहले कि हुजूर हमार लइका रउरा के भगवान के दर्शन करा दी । राजा कहले कि ठीक बा । लइका से राजा कहले कि ठीक बा तूं भगवान के दर्शन कराव । मंत्री के लइका राजा के एगो एकांत कमरा में ले गइल आ कहलस कि एक लीटर दूध मंगावल जाउ । बर्तन में दूध आ गइल । लइका कहलस कि एह दूध में मक्खन केने बा । राजा कहले कि नौजवान मक्खन त दूध भा दही के मथला पर मिली । त लइका कहलस कि सरकार, भगवान भी ध्यान-साधना के मथानी से मिलिहें । भगवान के दर्शन एतना सहज नइखे । जइसे दूध के मथला पर मक्खन मिली, ओहीतरे जप, ध्यान आ गहिर साधना कइला से भगवान के दर्शन मिली ।

मंदिर दर्शन क के लौटे लगनी त एगो साधु जी मिलले । उनका से कहनीं कि भगवान के बारे में कुछ बोलीं । त ऊ बड़ा रोचक जबाब दिहले । कहले- "राम कथा ही कथा ह, बाकी सब व्यथा ह।" एतना संक्षेप में एतना गूढ़ बात सुनि के हम चकित हो गइनीं । एगो घुमंतू साधु अपना आस्था आ विश्वास में कतना मजबूत बाड़े एकरा से बड़ उदाहरण का होई ।

www.bhojpurisahityangan.com

Estd. 2023

STUDYAATRA PVT. LTD. PRESENTS

+91 8423243389

Ballia CommerceNomy

Kyuki..... Commerce se sab hota hai

ACADEMY OF COMMERCE, MANAGEMENT AND BANKING

FOUNDER & DIRECTOR
Dr. RAKESH KUMAR VERMA

Assistant Professor (Ex.), SMMT PG College, Ballia
Commerce Faculty- Heritage School, Jamua, Ballia
PhD (Accounting & Finance) (RGIPT)
NET/JRF Commerce
M.Com (Delhi School of Economics- DU)
B.Com (H) (Hansraj College- DU)
Jawahar Navodaya Vidyalaya- Ballia

YOU DESERVE THE BEST EDUCATION

COURSE FEATURES
1. Online Live Classes
2. Recorded Video Access
3. Offline Classroom Session
4. Unlimited Mock Tests
5. Medium- Hindi and English
6. Access on Web and Android App

TEST SERIES
1. Chapterwise Tests
2. Full Syllabus Test

STUDY MATERIALS
1. Class Notes (PDF)
2. Question Practice Sheet (Chapterwise- PDF)

DOUBT SESSION
-Special doubt session facility

B.COM, M.COM
11th & 12th Commerce

- CUET Commerce (UG & PG)
- UGC NET/JRF (Commerce & Management)

Enroll Now

ADMISSION KIT*

Worth ₹15,299/- Free

- Worth ₹14,000 Add-on Courses
- Worth ₹500 Membership Fees Free
- Worth ₹100 Discount Coupon
- Worth ₹90 CommerceNomy Notepad
- Worth ₹10 One Ball Pen
- Worth ₹599 CommerceNomy Brand Logo T-shirt

CommerceNomy WORLD

STUDYAATRA
Commerceholic Freshers' Party
PADHAKU KAMP SELF STUDY HOME
CareiTY
NEXSTART Farewell Event
KamerceKraze Ballia CommerceNomy Mahotsav
Baat ExpertsKey
ComIIQuiz Ballia's Biggest Commerce Quiz
commercestalk Talent Search Examination

1st Time In Ballia City

Attend Live Classes through Ballia CommerceNomy Android App

GET IT ON Google Play

FREE Demo for 1 Days

Follow us

*Terms & Conditions Applied

पताः द्वारिकापुरी कालोनी (नियर चन्द्रशेखर आजाद ITI) – बलिया 277001

www.commercenomy.com +91 8423243389 helpcommercenomy@gmail.com

www.bhojpurisahityangan.com

#BeTheBetterInvestor

SUNIL KUMAR YADAV

OPEN AN ACCOUNT

Get Proper Guidance of a Mutual Fund Distributor

NJ WEALTH

One of **India's Largest** Mutual Fund Distributors

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

SUNIL KUMAR YADAV
MOBILE: 9839159190
Email: SKYAASNOLIMIT@GMAIL.COM

योगः कर्मसु कौशलम्

फ़ीनिक्स इण्टरनेशनल स्कूल

निमिया पोखरा (कटरिया), अलावलपुर- बलिया

Our Champions

12th
Jaya Verma
District Topper (PCM)

Satyam Chaurasiya
XII- 89%

Sakshi Tiwari
XII- 81%

Ayush Chaurasiya
X- 90%

Aditya Kumar
X- 75%

Kumari Srishti
X- 72%

Congratulations on your achievement !
Your hard work and dedication have paid off !

प्रवेश प्रारम्भ Session- 2025-26